साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

जुलाई 2026

विक्रम सम्वत् 2083

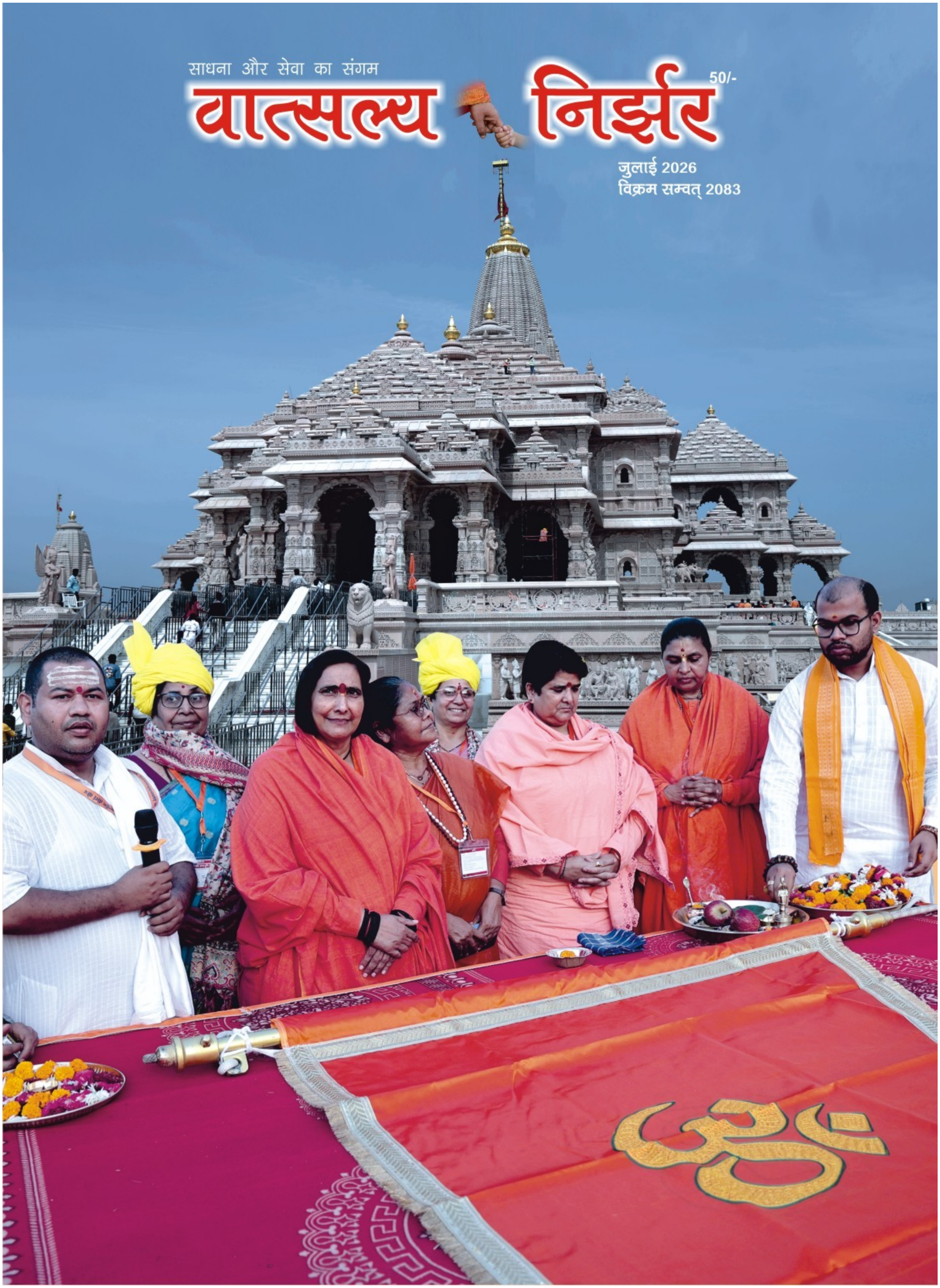

Rajluxmi Samvid Gurukulam
Sainik School
Nalagarh (Himachal Pradesh)
C.B.S.E. Residential Boys School
(Class VI to XII) Science and Commerce
SAMVID GURUKULAM
We bring out the winner in you
How We Stand Out ?
• Regular Sanskaram Classes
• Smart Classes and Experienced
• Teachers
• Indoor and Outdoor Games
• Shooting, Swimming, Horse Riding
• Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
• Communication Classes
• AC Hostels
• Pollution Free Environment
• Well Equipped Labs
• Healthy and Vegetarian Food
Contact for Admission
Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101
Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

मातृशक्ति का ऊर्जा केन्द्र श्री दुर्गा मंदिर, अयोध्या

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 23, अंक 6, जुलाई 2026

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता

प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई–23, बेसमेंट, सेक्टर–9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा

परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 परमात्मा के होते हुए भी...

08 हमारी प्रार्थनाओं में ईश्वर के प्रति...

10 जागृति – भाग 2

12 अयोध्य के आकाश पर लहराया...

18 निष्ठा दिवस विशेष

29 धर्म संस्कृति

32 हेमा संग उज्ज्वल

35 ऋषिका संग दमनदीप

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत

मानस मोती

सानुज सीय समेत प्रभु राजत परन कुटीर।
भगति ग्यानु बैराग्य जनु सोहत धरें सरीर॥

- अयोध्याकाण्ड

छोटे भाई लक्ष्मण और सीताजी सहित प्रभु श्रीरामचन्द्रजी पर्णकुटी में ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, मानों वैराग्य, भक्ति और ज्ञान शरीर धारण करके सुशोभित हो रहे हों।

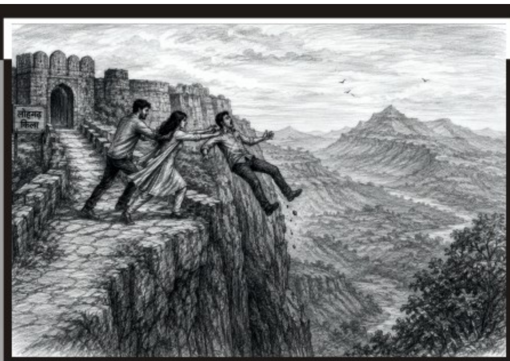

अपनी बात...

– देवेन्द्र शुक्ल

'कोई और नाम तुम खोजो, तुम भारत की नारी नहीं हो'

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी अपने प्रवचनों में अपनी लक्ष्मण रेखा को लांघने वाली स्त्रियों के लिए अक्सर ये वाक्य कहा करती हैं। जिस देश का पौराणिक काल 'सावित्री' जैसी देवी की स्वर्णिम आभा से दमकता है, जो यमराज से भी अपने पति को छीन लाईं थीं, उसी देश में इस कलियुग की 'सोनम' और 'सिया' जैसी स्त्रियाँ अपने पतियों को मौत की खाई में धकेलकर केवल स्वयं के नाम पर ही नहीं बल्कि इस महान देश के गौरवशाली सतीत्व पर भी कालिख पोत रही हैं।

भारतीय समाज में विवाह और प्रेम संबंधों को विश्वास, समर्पण और जीवन भर साथ निभाने के वचन का प्रतीक माना जाता है। पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका का संबंध केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी का संबंध भी होता है। किंतु हाल के वर्षों में ऐसे अनेक मामले सामने आए हैं, जिनमें पत्नी द्वारा पति या प्रेमिका द्वारा प्रेमी अथवा मंगेतर की हत्या करने के आरोप लगे हैं। इन घटनाओं ने समाज को झकझोरते हुए यह प्रश्न खड़ा किया है कि आखिर रिश्ते इतने हिंसक क्यों होते जा रहे हैं?

यद्यपि ऐसी कुछेक घटनाएँ पूरे समाज या सभी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं, तथापि चिन्ता का विषय ये है कि ऐसी घटनाओं में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। अधिकांश वैवाहिक और प्रेम संबंध विश्वास और सम्मान पर आधारित होते हैं, इसलिए किसी एक वर्ग को दोषी ठहराने के बजाय हमें उन सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिगत कारणों पर विचार करना चाहिए, जो कुछ मामलों में अपराध का कारण बनते हैं।

इंदौर के चर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड ने पूरे देश को तब स्तब्ध कर दिया था, जब वर्ष 2025 में हनीमून के दौरान मेघालय के शिलांग में राजा रघुवंशी की हत्या हुई। पुलिस ने जांच के बाद उनकी पत्नी सोनम और अन्य आरोपियों के विरुद्ध हत्या की साजिश रचने के आरोप लगाए। मामला अभी न्यायालय में विचाराधीन है। फिर भी इस घटना ने लोगों को यह सोचने पर विवश कर दिया कि यदि किसी रिश्ते में असहमति या प्रेम का अभाव था, तो उसका समाधान हत्या जैसा घृणित कृत्य तो कतई नहीं हो सकता था!

राजा रघुवंशी हत्याकांड के बाद ऐसी ही कई घटनाएँ देश के विभिन्न भागों में घटीं और अभी जून 2026 में पुणे के केतन अग्रवाल हत्याकांड ने भी लोगों को झकझोर कर रख दिया। पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक जाँच में आरोप है कि केतन अग्रवाल की मंगेतर सिया गोयल और उसके कथित साथी ने मिलकर हत्या की साजिश रची। यह मामला भी अभी जाँच और न्यायिक प्रक्रिया के अधीन है, इसलिए सभी आरोप न्यायालय में सिद्ध होना बाकी हैं। इन दोनों मामलों में एक समानता यह दिखाई देती है कि यदि संबंध स्वीकार्य नहीं थे या किसी अन्य व्यक्ति के प्रति लगाव था, तो ईमानदारी से संबंध समाप्त करने के बजाय हिंसक रास्ता अपनाने के आरोप सामने आए। यह प्रवृत्ति अत्यन्त ही चिंताजनक है।

आज के समय में सोशल मीडिया, फिल्मों के प्रभाव और त्वरित सफलता की मानसिकता ने भी रिश्तों की समझ को प्रभावित किया है। कई बार लोग यह मान बैठते हैं कि यदि कोई संबंध उनकी इच्छाओं के अनुरूप नहीं है, तो उसे किसी भी कीमत पर समाप्त किया जा सकता है। जब संवाद समाप्त हो जाता है और स्वार्थ या क्रोध हावी हो जाता है, तब अपराध की संभावना बढ़ जाती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि असुरक्षा, अधिकार की भावना, आर्थिक हित, विवाह का दबाव, पारिवारिक तनाव और भावनात्मक अपरिपक्वता भी ऐसे अपराधों के पीछे महत्वपूर्ण कारण हो सकते हैं। हालाँकि ये कारण किसी भी प्रकार से हत्या को उचित नहीं ठहराते। किसी भी परिस्थिति में कानून अपने हाथ में लेना स्वीकार्य नहीं है।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि घरेलू हिंसा और रिश्तों में हत्या के अपराध केवल एक ही लिंग द्वारा नहीं किए जाते। भारत में पुरुषों द्वारा महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, दहेज हत्या और अन्य गंभीर अपराधों के भी अनेक मामले सामने आते रहे हैं। इसलिए समस्या को 'पुरुष बनाम स्त्री' के रूप में देखने की अपेक्षा 'रिश्तों में बढ़ती हिंसा' के रूप में देखना अधिक उचित होगा।

ऐसी घटनाएँ गंभीर चिंता का विषय तो हैं ही परन्तु अब इनके संदर्भ में समाज में जनजागरण चलाने का समय आ गया लगता है। युवक-युवतियों को यह बताया जाने का समय आ गया है कि यदि किसी संबंध में प्रेम या विश्वास नहीं बचा है, यदि परस्पर अनिच्छाओं की गहरी खाई है तो स्पष्ट बातचीत और कानूनी तरीके से अलग होना कहीं ज्यादा अच्छा है। परिवार के बच्चों के दिमागों में इस बात को अच्छे से बैठा दिया जाना चाहिए कि कोई अपराध चाहे जितनी शातिरता से किया जाए, आज के आधुनिक युग में वो पकड़ा ही जाता है। अपनी उन्मुक्त इच्छाओं के कारण किसी का जीवन समाप्त करके जीवन भर के लिए सलाखों के पीछे चले जाना, कितनी बड़ी मूर्खता है, यह बात बार-बार उनके मन-मस्तिष्कों में बैठायी जानी चाहिए। दूसरी बात ये है कि परिवारों को भी युवाओं पर अनावश्यक वैवाहिक दबाव नहीं डालना चाहिए।

इस आलेख का वीडियो देखने के लिए इस क्यू आर कोड को स्कैन करने के बाद दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें

परमात्मा के होते हुए भी दुःख क्यों होता है?

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

हम सभी पूजा पद्धति उपासनाओं की आवश्यकता मानते हैं। परम ज्ञानी शंकराचार्य जी भी कर्म उपासना ज्ञान का महत्व बताते हैं। जिन शंकराचार्य को हम साक्षात् शंकर का अवतार मानते हैं, वो वेदों का आदर करते हैं। वेदों के विपरीत अपने किसी मत की स्थापना नहीं करते। वो जो भी कहते हैं, वेदों के उदाहरण देते हैं। वैदिक सत्य के प्रतिपादन में सारी बुद्धि और शक्ति लगाते हैं। उसके लिए ग्रंथ लिखते हैं। इसलिए हम सब लोग वैदिक है। हमारे सभी धर्माचार्य, वेदों के अनुसार अपनी उपासनाओं का महत्व बताते हैं और मानव को लक्ष्य तक पहुँचाते हैं।

हम इतने पूर्ण आचार्य नहीं है। हम तो एक साधक के समान इस रास्ते पर चलते रहे और धीरे-धीरे ऐसा लगता है कि हम सही रास्ते पर हैं। यह भी लगने लगा है इसके मिलने के बाद ही मनुष्य का जीवन धन्य होता है। इतना स्पष्ट हो गया है। जो सच्चिदानंद रूप है जिससे सृष्टि उत्पन्न हुई है, स्थिर रहती है, लय होती है, जिसके ज्ञान से तापों का नाश होता है, ऐसे उस परम सत्य, कृष्ण भगवान को हम नमन करते हैं। श्रीमद् भागवत में उसी को 'सत्यम परम धीमहि' कहा गया है। उपनिषद का मंत्र है 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते यतः' जिससे यह संपूर्ण प्राणी जिससे पैदा होते हैं। दृश्य भी पैदा होते हैं, दृष्टा भी पैदा होते हैं। जड़ भी पैदा होते हैं, चैतन्यता भी पैदा होती है।

जब आपके शरीर में दर्द होता है, तब किसे इस दर्द का ज्ञान होता है? तो हम कहेंगे कि होता तो तुम्हें है पर बिना मन के नहीं होता। सीधा चैतन्य दर्द का दृष्टा नहीं है। चैतन्य को दर्द का ज्ञान नहीं हो सकता। चैतन्य भोक्ता नहीं है दर्द का। चैतन्य मन के द्वारा दर्द का भोक्ता है। जैसे आप आँख के द्वारा रूप के दृष्टा हैं। आप रहें और आँख ना हो तो रूप को नहीं देख सकते। आप में दम नहीं कि आप रूप देख सकें। आप रूप के दृष्टा हैं। आपके बिना रूप नहीं दिखता पर आपको भी नहीं दिखता बिना आँख के। इसी तरह दर्द के ज्ञाता आप हैं पर मन के द्वारा। केवल मन को हटा दिया जाए, सुला दिया जाए तो दर्द का ज्ञान आत्मा को नहीं होता। खैर इसलिए अनुभोक्ति और अनुभाव्य दोनों पैदा होते हैं। अर्थात् इंद्रियाँ और इंद्रियों के विषय दोनों जन्मते हैं। मन और जगत दोनों पैदा होते हैं। जगत और जगत का अनुभवी प्रकट होता है। जब तक अनुभवी प्रकट नहीं होता तब तक जगत का पता ही नहीं चलता। दोनों पैदा होते हैं। बिना चेतन के उपजे जगत कैसे दिखने लगा? जैसे उपजी आग से चाय बनती है। अजन्मा आग से कोई चाय नहीं बना सकता, रोटी नहीं सेक सकता, अंधेरे को नहीं हटा सकता। प्रकट प्रकाश अंधेरे को खत्म करता है। समान चेतन, समान प्रकाश जो अग्नि है वह किसी को खत्म नहीं करती। अर्थात् समान अग्नि लकड़ी की भी दुश्मन नहीं है। आग का और लकड़ी की जो दुश्मनी है वह पैदा होने के बाद है।

असली राम तो रावण को भी नहीं मारते। रावण को मारने के लिए जन्मते हैं राम। जन्में राम, रावण को मार सकते हैं। व्यापक राम रावण की आत्मा हैं, वो मार ही नहीं सकते। नहीं तो प्रकट होने के समान चेतन यदि जगत का विरोधी होता तो ज्ञान की क्या जरूरत? जगत तो दिख ही ना पाता। अर्थात् ब्रह्म जगत का तो पिता है, उससे जगत होता है, उसमें जगत रहता है, उसमें जगत लय होता है। ब्रह्म जगत का विरोधी नहीं है। ब्रह्म ज्ञान जगत का विरोधी है। अज्ञान का विरोधी आग नहीं है, प्रकट आग है। ठंडक को अग्नि दूर नहीं करती बल्कि प्रकट अग्नि ठंडी को दूर करती है। प्रकट राम दुःख दूर करते हैं। अप्रकट राम दुःख दूर नहीं करते। कई लोगों को प्रश्न होता है जब ब्रह्म है तो दुःख क्यों है?

वही बात है कि आग है तो ठंडी क्यों सताती है? जब लकड़ी में आग है तो लकड़ी को क्यों नहीं जला देती? पत्थर को कोयला क्यों नहीं कर देती? पत्थर में रहती है। तो ब्रह्म रहता है और तब भी दुखी है संसार, तब भी जन्म-मरण है। इसीलिए ब्रह्म को समझना है। जिससे यह सब प्राणी पैदा हुए हैं। सृष्टि

और सृष्टि का भोक्ता। सृष्टि और सृष्टि का दृष्टा। सृष्टि दिखती सदा क्यों नहीं? आपको सदा दिखती रहती है? सृष्टि का दिखना शुरू होता है फिर दिखना बंद हो जाता है। तो कुछ तो हुआ। कौन पैदा हुआ कि सृष्टि दिखने लग गई? कौन सो गया या खो गया जो सृष्टि दिखनी बंद हो गई?क्योंकि यह सृष्टि तो हमें ज्ञान के लिए ही बनी है। यदि यह जगना ना होता, जगत दिखा ना होता तो बंधन ना दिखता, दुःख ना दिखता, मेरा तेरा ना दिखता। चिंता हमें पसंद नहीं, मृत्यु हमें पसंद नहीं। तो इस अर्थ में देखें कि यह संसार फँसाता है, दिखाता है।

ध्यान रखना कि यहाँ पैदा हुआ और पैदा करने वाला दोनों एक ही है। मिट्टी से घड़े बने हैं पर मिट्टी ने नहीं बनाए, कुम्हार ने बनाए हैं। पर खुद से नहीं बनाए मिट्टी से बनाए। इसलिए ना तो कुम्हार ईश्वर है और ना मिट्टी ईश्वर है। क्यों? कुम्हार घड़े को जन्म दे सकता है पर घड़े का जीवन कुम्हार पर अब निर्भर नहीं है। पैदा करने के पहले कुम्हार की जरूरत थी। अब कुम्हार मर जाए तो भी घड़ा रहेगा। लाल किला अभी तक बना है। ताजमहल अभी तक बना है। बनाने वाला मर गया। बनाने वाले का अब मोहताज ताजमहल नहीं है। सृष्टि बनाकर भगवान मर जाए, सृष्टि चलती रहे। तुमने मशीन चला दी अब चल रही है ऑटोमेटिक। ऐसा ईश्वर नहीं है। ईश्वर ने दुनिया बना दी और वह सो गया। चल रही है। तुम मशीन चलाकर सो जाते हो, वो चलती रहती है। ऐसे ही भगवान भी क्षीर सागर में अब सो गए।

भगवान क्या है? उसे जानो। पहले विश्वास करो, मानो पर लक्ष्य है जानो। माना हुआ भगवान भक्ति देगा, माना हुआ भगवान आपके हृदय को रस देगा परन्तु मुक्ति नहीं देगा। मुक्ति तो जाना हुआ भगवान देगा। जब तक हम भगवान को जानेंगे नहीं तो भागवत में उस सत्य का नाम कृष्ण कहा है और उपनिषद ने उस सत्य का नाम ब्रह्म कहा है। अर्थात् उसी को तुलसीदास ने राम कहा है। उस राम नाम से जाने जाने वाले प्रभु राम को हम नमन करते हैं। वही राम हैं, वही कृष्ण हैं, वही जानकी राधा।

ईश्वर का सही विश्लेषण, परमात्मा का सही चिंतन, मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक और कल्याणकारी भगवान का चिंतन किया है तो भारत के ऋषियों ने किया है। भगवान के विषय में कोई अज्ञान अंधेरा नहीं रह सकता। विश्व के सभी संप्रदायों में विश्वास से ही, विश्वास ही है ईश्वर का, विश्वास में ही समाप्त है बस। विज्ञान वहाँ है ही नहीं। किसी का चौथे में रहता है, किसी का सातवें में रहता है, किसी का ऐसे। उस पर चिंतन नहीं है। हमारे यहाँ विश्वास से यात्रा शुरू होती है लेकिन समझ में पूरी होती है।

हम विश्वास से यात्रा शुरू करते हैं परन्तु विश्वास में पूरी नहीं करते। स्वामी राम जब विदेश गए, किसी ने पूछा कि तुम ईश्वर को मानते हो? कहते हैं नहीं। अब लोगों को लगेगा तुम बाबा बने हो, घर-बार छोड़ा है, ईश्वर को मानते नहीं। कहते हैं फिर आप साधु क्यों बने? कहे जानने के लिए। ठीक। मानते नहीं हो? कहे नहीं, हम तो जानते हैं। मानता तो वो जो जानते ही नहीं। हम कोई मानते भर थोड़ा हैं, जानते हैं। अब तुम यहाँ बैठे हो, हम मानते हैं क्या? तुम यहाँ बैठे हो, मैं यहाँ प्रवचन कर रहा हूँ, मानते हो? देख रहे हो? इसमें कोई हम विश्वास थोड़ी कर रहे हैं। अंधविश्वास थोड़ी हैं, प्रत्यक्ष हैं।

तो, थोड़ी मेहनत तो करनी पड़ेगी। तुम देखो, हमको देखकर अपना विश्वास मजबूत करो। हमारा जैसा बुद्धू, गाँव का। गाँव में जन्म, पढ़ाई-लिखाई कुछ नहीं। यदि हमारे जैसे लोग और भी कहूँ, कबीर जी जैसे लोग जिनका ठिकाना ही नहीं। कहाँ पले? गुरु नानक देवजी, पढ़े थोड़ी। अब उन पर पी.एचडी. हो रही हैं। कबीर साहब पर इतना मत खड़ा है। ऐसे-ऐसे लोग इस सत्य को पा सकते हैं। पर जरूरत पड़ी तो पाया। आपको जरूरत नहीं है। दुःख तो है, उसे दूर भी करना चाहते हैं पर दुःख भगवान के पाने से जाते हैं, यह समझ नहीं है। आपको लगता है कि व्यक्ति के पाने से, धन के पाने से, पद के पाने से दुःखों की निवृत्ति हो जाएगी। इसलिए दुःख निवृत्ति में पूरी शक्ति संसार की तरफ है। संसार बिलकुल व्यर्थ नहीं है। आँखों की बड़ी जरूरत है। रोशनी की जरूरत नहीं, रास्ता नहीं दिखेगा। मुख जरूरी है, भोजन जरूरी है। नहीं खाया तो शरीर ही नहीं रहेगा। यह बड़ा उपयोगी है। संसार की वैल्यू जरा भी कम नहीं है। यदि संसार की वैल्यू ना होती तो भगवान इतने बुद्धू नहीं हैं कि जगत बनाते। उन्होंने पैदा किया है। व्यर्थ नहीं। यह जगत भगवान से हुआ है। उन्होंने एक चीज भी व्यर्थ नहीं पैदा की। आँखें जरूरी हैं, दिमाग जरूरी, मन जरूरी, बुद्धि जरूरी। और मानव तन भी जरूरी ना होता तो पशु बनाकर छुट्टी पा लेते, कीड़े बना लेते, मनुष्य ना बनाते। आखिर पशु-पक्षी बनाकर भगवान संतुष्ट नहीं हुए। मनुष्य बनाया।

इसीलिए हम भगवान के भक्त हैं कि प्रभु आपने हमें फँसाने के लिए नहीं बनाया। आपने हमें मुक्ति देने के लिए बनाया। इसको देखकर ही हम तुम्हारा दर्शन करते हैं। शीशा हमें फँसाने के लिए नहीं है। मिरर। आप घर पर रखते हो ना? अब देखो, वही मिरर, वही शीशा चिड़िया को भ्रम में डालता है। एक बार बंदर को शीशा मिल गया, वो देखे। हम बंदर को देख-देखकर हँस रहे हैं। अब नजर है, शीशा है, दिख तो जाता ही है। चिड़िया को भी दिख जाता है, तुम्हें भी दिख जाता है। पर तुम्हें जो दिख जाता है उतना ही नहीं, कुछ वो भी देख लेते हो जो चिड़िया नहीं देख पाती। अब वो कैसे बताए कि क्या देख पाती है। तुम क्या देख पाए चिड़िया से अलग? आँखें वही हैं। तो जीवन कैसे देखना है? यह सबको अक्ल नहीं है। यह अंतःकरण है, यह देह है। पर कुछ और भी देख लेता है मनुष्य इसी में। जो आम मनुष्य नहीं देख पाता। जो नास्तिक नहीं देख पाते। जो धन में लगे पड़े हैं और कुछ सूझता ही नहीं, नहीं देख पाते। इसके लिए जो समय निकालते हैं, अपने साहित्य धर्म ग्रंथों पर श्रद्धा रखते हैं, उन गुरुओं पर कुछ विश्वास करते हैं, उनको यह समझ आ जाता है।

www.youtube.com/watch?v=xPiYv21Rga4 से साभार

इस आलेख को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की अमृतवाणी में सुनने के लिए इस क्यू आर कोड को स्कैन करने के बाद दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें

हमारी प्रार्थनाओं में ईश्वर के प्रति धन्यवाद हो

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा एक-एक कला अर्जित करता है और पूर्णिमा के दिन अपनी सारी चाँदनी को सारी सृष्टि पर बिखेर देता है और फिर स्वयं एक-एक कला अर्जित करने की साधना में अग्रसर हो जाता है ठीक इसी तरह भारत का परोपकारी सम्पन्न समाज धन-सम्पदा अर्जित करते हुए, जहाँ कहीं उसकी आवश्यकता है, उसे समर्पित भी करता है। जल से भरे हुए बादल आतुर और व्याकुल रहते हैं जहाँ कहीं भी धरती का प्यासापन उन्हें पुकारता है। वो बादल अपने आपको समर्पित करते हुए अपनी सारी जलराशि को सृष्टि पर बिखेर देते हैं। भारतीय संस्कृति ने हमको अर्जित करना और समर्पित करने की समान प्रेरणा दी है।

पूज्य श्री शंकराचार्य जी महाराज के मुखारविंद से हमने जिंदगी को प्रसन्न और आनंद पूर्ण बिताने के बहुत सुंदर सूत्र श्रवण किए स्वामी जी ने घोषणा की वह धर्म जिसको हम समझ नहीं पा रहे वह एक है :

एक जोत है सब दीपों में सारे जग में नूर एक है
सच तो यह है इस दुनिया का हाकिम और हजूर एक है
हर मानव माटी का पुतला जीवन का आधार एक है
गहराई तक जाकर देखो सब धर्मों का सार एक है
एक वाहेगुरु एक परमेश्वर कृष्ण और श्रीराम एक हैं
नाम भले ही अलग-अलग हों भक्तों के भगवान एक हैं
नाम रूप की बात छोड़ दो इंसानों की जात एक है
मन से मन की तार जोड़ लो सीधी सच्ची बात एक है।

हमारा मन, मन के साथ जुड़े। शरीर अपनी सीमा में बंधा है। बर्फ के दो टुकड़े पास तो आ सकते हैं लेकिन एक नहीं हो सकते। एक होने के लिए उन दोनों को पिघलना पड़ेगा। जब तक बर्फ के टुकड़े पिघलकर पानी नहीं हो जाते, तब तक मिलन संभव हो ही नहीं सकता। हमारी यात्रा भले कामना से प्रारंभ होती हो लेकिन यह कामना प्रीति में और प्रीति प्रेम में बदलना चाहिए। दो शरीरों का साथ में आना शायद कामना से प्रेरित होता है लेकिन जब मन का एक में एक हो जाना घटित हो, तब यहाँ से प्रेम का प्रारंभ हो जाता है। बर्फ के दो टुकड़े साथ-साथ तो हो सकते हैं पर एक नहीं हो सकते। कामना हमें थोड़ी देर के लिए एक साथ लाती तो है परन्तु एक नहीं कर सकती। इसके विपरीत शरीरों के मिलन के बाद जब मिलन मन का होता है तो मानो बर्फ के दो टुकड़े पिघल गए और पानी हो गए। प्रेम का प्रारंभ हो गया।

लेकिन कहानी यहाँ खत्म नहीं होनी चाहिए क्योंकि बात तो तब बनेगी जब वह पानी भाप बनकर अदृश्य होकर अदृश्य में मिल जाए। इसी तरह हमारा प्रेम, हमारी प्रीति जब भक्ति में परिवर्तित होगी तब हमारे जीवन में हम पूर्णता को प्राप्त कर पाएंगे। जिंदगी में उसे पाया जाये, जिसे पाने के बाद संसार में कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। ऐसा होने पर ही अपने आप आस्तिकता के स्तर जीवन में उठते हैं। जो मिला है उसके प्रति धन्यवाद का भाव और जो हाथों से जा रहा है उसके प्रति कोई रंजो गम नहीं क्योंकि यह प्रवाह निरंतर प्रवाहित हो रहा है। कभी भी रेत के घरौंदे बनाकर उसमें बसा नहीं जा सकता, ताश के पत्तों के घर बहुत दिनों तक टिका नहीं करते इसी तरह हम जगत की हकीकत को जानते हैं कि यह प्रवाह है और निरंतर प्रवाहशील प्रवाह बहता चला जा रहा है। हमारा शरीर बह गया, हमारे चारों तरफ जो दृष्टिगोचर हो रही है वह सृष्टि भी निरंतर काल के गाल में समा रही है लेकिन जो काल के परे है, उस परम सत्य का अन्वेषण करने के लिए, उसे प्राप्त करने के लिए ही मुझे मनुष्य का तन मिला है।

क्या मैं मनुष्य होकर मनुष्यता अर्जित कर सका? तो यहाँ हम अपने आपको गरीब ही पाएंगे क्योंकि :

इंसान को इंसान सा होना नहीं आया
दूसरे के दर्द पे रोना नहीं आया
इंसान की इंसानियत से हो गई शादी
अफसोस है कि आज तक गौना नहीं आया।

आदमी आदमियत का मालिक कहलाता है पर आदमियत की दौलत को घर लाना भूल गया है इसलिए चारों तरफ आदमी दिवालिया नजर आता है। धन, पद और प्रतिष्ठा के चारों तरफ फैले हुए वैभवों के बीच में भी आज मानव दरिद्र है, बेचारा है क्योंकि उसने मनुष्यता को खो दिया है, आदमियत को खो दिया है, मोहब्बत और प्यार को खो दिया है। जीवन की यह यात्रा पशुता से मनुष्यता और मनुष्यता से भगवत्ता के शिखर छूने की थी और हम बीच में अटक गए। मनुष्य का तन लेकर पशुता में उलझ कर रह गए। इसीलिए हमको चारों तरफ अपूर्णता का साम्राज्य दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति की महिमा तो हमने सुनी है लेकिन उसके गौरव को, उसकी गरिमा को हमने अपने हृदय से निकाल दिया। कई बार पाश्चात्य सभ्यता का कचरा भी हमको स्वीकारने में कभी परहेज नहीं होता क्योंकि हमें हमारी संस्कृति के प्रति गौरव का भाव नहीं रहा। कभी लगता है कि :

जिस हिन्दू ने नभ में जाकर, नक्षत्रों को दी है संज्ञा
जिसने हिमगिरि का वक्ष चीर, भू को दी है पावन गंगा
जिसने सागर की छाती पर, पाषाणों को तैराया है
हर वर्तमान की पीड़ा को, जिसने इतिहास बनाया है
जिसके आर्यों ने घोष किया, कृणवन्तो विश्वमार्यम् का
जिसका गौरव कम कर ना सकी, रावण की स्वर्णमयी लंका
जिसके यज्ञों का एक हव्य, सौ-सौ पुत्रों का जनक रहा
जिसके पावन आंगन में भयाक्रांत, धनपति बरसाता कनक रहा
जिसके पावन बलिष्ठ तन की रचना, तन दे दधीचि ने की
राघव ने वन-वन भटक-भटक, जिस तन में प्राण प्रतिष्ठा की
जौहर कुंडों में कूद-कूद, सतियों ने जिसे दिया सत्व
गुरुओं, गुरु पुत्रों ने जिसमें, चिर बलिदानी भर दिया तत्व
वो शाश्वत हिन्द हिन्दू जीवन, क्या स्मरण ही मात्र रह जाएगा
इसकी पावन गंगा का जल, क्या नालों में बह जाएगा
इसके गंगाधर शिवशंकर, क्या ले समाधि सो जाएंगे
इसके पुष्कर इसके प्रयाग, क्या गर्त मात्र हो जाएंगे
यदि तुम ऐसा नहीं चाहते, तो फिर तुमको जगना होगा
हिन्दू राष्ट्र का बिगुल बजाकर, दानव दल को दलना होगा।

अगर आप चाहते हो कि विश्व के अंदर भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा तो इस गौरव को, इस गरिमा को अनुभव कीजिए। अनुभव कीजिए क्या थे हम, क्या हो गए हैं हम और आगे क्या होंगे। हम अपने गौरव, अपनी गरिमा, अपनी पहचान, अपनी परंपरा, अपनी मान्यताओं का अतिक्रमण करके हम बिलकुल दरिद्र होकर समझ नहीं पा रहे कि जाना कहाँ है। मंजिल कौनसी है। दिशा भ्रमित हो गए हम। इसकी दृष्टि हमारे पास थी लेकिन वह दृष्टि मंद पड़ गई है, आँखों के आगे अंधेरा छा गया है। दुष्टों का वंदन करें या ना करें, हम स्वयं दुविधा में हैं। जिनको दंड देना चाहिए, उन दुष्टों को हमने दंड नहीं दिया और जिनका वंदन करना चाहिए, उन वंदनीयों का हमने वंदन नहीं किया। कहाँ जाकर बैठना है, किससे दृष्टि प्राप्त करना है, हम भ्रम में हैं। भारतीय संस्कृति ने हमें जीना सिखाया। उस परमपिता परमात्मा की प्रत्यक्ष शक्ति से ओतप्रोत इस सृष्टि का दर्शन करना सिखाया। यह हमें परमसत्ता का दर्शन करने वाली दिव्य दृष्टि देती है। इस पार खड़े करके जो अपार का दर्शन करवाती है, जो वासनाओं के जंजाल में भी निष्कंप है, वह जो कूटस्थ है, वह जो अविनाशी है, उस भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा का भाव हमारे हृदय से तिरोहित होता चला जा रहा है। क्यों? क्योंकि अपसंस्कृति हावी हो गई। भारतीय संस्कृति के प्रति वह गरिमा गौरव और आग्रह का भाव तिरोहित होता चला गया। धन-वैभव का हम विरोध नहीं कर रहे लेकिन यह परम शांति दे नहीं सकता।

दूसरी बात कि हमेशा सबका निरीक्षण मत करो। अपने आपका निरीक्षण करो कि हम कहाँ खड़े हैं। जो मिला है उसके प्रति धन्यवाद का भाव व्यक्त करो। हम हमेशा ही प्रार्थना के नाम पर कामनाओं की फेहरिस्त परमात्मा के सामने रखते रहे। कदाचित्, हमारी प्रार्थनाएँ निष्काम भाव से होतीं। जो मांगता है, वह तो मजदूर होता है। हमारी प्रार्थनाओं में धन्यवाद होना चाहिए कि प्रभु आपकी प्रत्येक दी हुई परिस्थिति का मैं स्वागत करता हूँ। आपसे प्राप्त सुख भी दिव्य है नाथ और दुःख भी बहुत बड़े रहस्यों से भरा है क्योंकि यदि आपने मेरे सामने दुःख उपस्थित ना किया होता तो मैं कभी सुख की महिमा को समझ नहीं पाता। अगर अपमान के काँटे मेरे हृदय में ना चुभे होते नाथ, तो मैं सम्मान की महिमा भी ना समझ पाता। अगर मैं गहरी अंधकार भरी रात से ना गुजरा होता मेरे नाथ, तो मैं प्रातः के उजाले की भी महिमा को समझ ना पाता। अगर मेरे सामने मृत्यु ना होती नाथ, तो मैं जीवन की महिमा को भी समझ ना पाता।

हे नाथ! इसीलिए सुख-दुःख, मान-अपमान, लाभ-हानि, हर्ष-विषाद और जीवन-मृत्यु के बीच मैं आपकी ही कृपा को अनुभव कर रहा हूँ। आपकी ही करुणा का दर्शन कर रहा हूँ। यदि मैं रुग्ण हूँ नाथ, तो ये भी आपकी ही कृपा है। यदि मेरा शरीर चारपाई पर पड़ा है तो भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। चारपाई पर ही समय से भोजन और दवाई मिल ही जाती है, यदि काम का रहता तो घरवाले कोल्हू का बैल बनाकर जोतते रहते। आज यहीं पड़े-पड़े आपके नाम का भजन करता हूँ। कर्कशा स्वभाव की पत्नी पल्ले पड़ गई तो भी धन्यवाद देता हूँ प्रभु कि अगर उसका स्वभाव का मधुर होता तो मैं उसके मायाजाल में फँस गया होता और आपका विस्मरण हो गया होता। अपनों से ठोकरें खाता हूँ तो भी धन्यवाद ही देता हूँ। आपकी कृपा है नाथ, आपकी करुणा है नाथ, आपकी दयालुता है नाथ, जो पल-पल दिखाई देती है।

यह आस्तिक का स्तर है। आस्तिक कभी शिकायत नहीं करता, वह धन्यवाद ही देता है। जो भक्त होता है वह शिकायत नहीं करता, वह धन्यवाद करता है। हम जीवन में प्रभु को धन्यवाद करना जिस दिन सीख जाएंगे, उस दिन सोचना कि जीवन में आस्तिकता पैदा हुई भक्ति का प्रादुर्भाव हुआ।

इस आलेख का ऑडियो सुनने के लिए इस क्यू आर कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करके दिखाई देने वाली लिंक पर क्लिक करें

जागृति

भाग-2

- भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख मई, 1994 को लिखा गया है)

गतांक का शेष...

भारत के जीवन की संरचना के दो प्रमुख आधार तत्व हैं- एक संत, दूसरा नारी। गत लगभग हजार वर्षों से ये दोनों संरचना तत्व पीछे धकेले जाते रहे हैं। जितना-जितना और जब-जब इस तत्व को पीछे धकेला गया, इसे अनादृत किया गया, इसकी छवि बिगाड़ी गई, उसी मात्रा में भारत पीछे हटता गया, उसकी छवि विकृत होती गई, उसकी प्रगति के मार्ग अवरुद्ध होते गये, उसकी राष्ट्रीय प्रज्ञा कुण्ठित, लोकजीवन की संवेदनाएँ सुन्न होती गईं और देशवासी अपनी गर्वोज्ज्वल परम्पराओं से कटते गए। समय के साथ उत्पन्न होने वाले विकारों का परिष्कार करने का कार्य जब जब रुका, देश की पवित्र जीवनधारा गंदे नाले में बदलती रही।

भारत के काल निरपेक्ष राष्ट्र और लोकजीवन की पवित्रता बनाए रखने के साथ-साथ उसमें काल सापेक्षता का निर्माण करते रहने का अनुष्ठान यहाँ की एक सत्त प्रक्रिया रही है और उस प्रक्रिया को हमारे संत, हमारी माताएँ और हमारे संतवत् प्रज्ञा पुरुष किसी न किसी रूप में, किसी न किसी स्तर पर सदैव और सत्त करते रहे हैं। भारत में लोकजीवन का परिष्कार करने के आंदोलन और अनुष्ठान का हजारों वर्ष का एक लम्बा और प्रेरणास्पद इतिहास है। अपनी राजसत्ता और भौतिक वैभव का त्याग करके लोकजीवन को समर्पित होने वाले पुरुषों एवं नारियों की संख्या इतनी बड़ी है कि किसी भी तालिका में सभी का नाम लिख पाना सर्वथा असंभव है। ज्ञात और ज्ञेय व्यक्तियों की तालिका बना भी ली जाये तो उन आत्मविलोपी, अज्ञात और अज्ञेय व्यक्तियों का पता कैसे लगाया जायेगा जो लोकान्धकार से लड़ते-लड़ते सवेरा होने के पूर्व अज्ञात में अन्तर्ध्यान हो गये।

प्रश्न सफलता असफलता या किसी का नाम जप करने का नहीं है। प्रश्न है देश के लोकजीवन की धारा में आने वाले ठहराव और उस ठहराव के कारण उत्पन्न होने वाली सड़ांध को समाप्त करने के प्रयासों तथा प्रतिक्रियाओं की ओर ध्यान देकर समयानुकूल नई प्रक्रिया प्रारंभ करने के साथ-साथ अपने राष्ट्र की पुनर्रचना के दो प्रमुख तत्वों 'सन्त और नारी' का इस प्रक्रिया में सहभागी बनने-बनाने का।

सन्त और नारी की चिन्ता भारत देश की चिन्ता है। सन्त और नारी का चरित्र भारत देश का चरित्र है। सन्त और नारी का चिन्तन, भारत देश का चिन्तन है। इन दोनों के बिगड़ने से भारतीय लोकजीवन और भारत देश बिगड़ता है। इनके गिरने से देश गिरता है, उठने से देश उठता है। भारत देश का मानस इनके साथ सम्बद्ध है। ये ही मानसिक क्रांति के वाहक हैं, और यह मानसिक क्रांति आज केवल भारत की ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व की भी प्रथम आवश्यकता है।

प्रश्न यह है कि कैसे और कब होगी यह मानसिक क्रांति कि भारत के लोकजीवन को अपने 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के दायित्व की प्रतीती और पहचान हो सके जिसमें न कोई छूत-अछूत है, न कोई ऊँच-नीच। जिसमें केवल एक ऐसा लोक परिवार है जो दोनों के साथ समान अहसास के साथ जुड़ा है, जिसकी योगक्षेम की भावना समान रूप और समान भाव से सबको एक स्नेहसूत्र में गूँथ कर एकरस और एकात्म कर देती है। यह केवल भारत का ही नहीं सम्पूर्ण संसार का सौभाग्य है कि भारत के सन्त अपने आश्रमों और मठों से बाहर निकल आए हैं और भारत की नारी अपने चूल्हा-चौका, पालना और परिवार के साथ-साथ लोकजीवन को भी संस्कारित करने के लिए अपनी ड्योढ़ी लांघकर बाहर निकल आई है। अब परीक्षा और परख होनी है उन बुद्धिजीवियों या बुद्धिवादियों की जो देश-दुनियाँ का स्वयंभू नियन्ता होने का दम भरते है। ये ऐसे लोग हैं कि यदि सन्त आश्रमों में रहकर ध्यान-धारणा करते हैं तो वे उन्हें हरामखोर और देश पर बोझा बताते है और यदि वे सामाजिक कुरीतियों को दूर करके राष्ट्रीय अस्मिता और परम्परा बोध जागृत करने के लिए गाँव-गाँव घूमकर लोक परिष्कार का अभियान चलाते है तो उन्हें राजनीति से दूर रहने की सलाह देते है। ठीक इसी प्रकार

जब भारत की नारियाँ अपने भारतीय लोकजीवन और परिवार के बिगड़े संस्कार और टूटते सम्बन्धों को देख और चिंतित होकर उसके कारणों का निराकरण करने का सक्रिय प्रयत्न करती है तो उन्हें अंधयुग की मानसिकता से पीड़ित कहकर धकिया देते है।

गत 7 मई 1994 का 'राष्ट्रीय हिन्दू महिला सम्मेलन' उन सभी के लिये चुनौती और चेतावनी दोनों है, जो पश्चिमीकरण को आधुनिकीकरण मानते हैं, जिनका मानना है कि 'नारी स्वातन्त्र्य' का समर पश्चिमी तौर तरीके पर लड़ा गया तो ही वह सफल होगा। जिनकी कार्ययोजना में उनकी वासना की पूर्ति करने वाली औरत तो है लेकिन सृष्टि का संस्कार और सौन्दर्य नारी नहीं है, जो महिला को केवल भोग्या मानते हैं और जिन्हें ममतामय मातृत्व से कोई प्रयोजन नहीं हैं। 7 मई 1994 को देश की हजारों नारियों ने नारी स्वातन्त्र्य की इस विकृत अवधारणा को अस्वीकार कर दिया। यह सम्भवतः इस कारण हो सका कि वह पुरुषों की बराबरी और समान अधिकार के लिए आन्दोलित पश्चिमी तर्ज पर जीवन जी रही 'तितलियों' का नहीं, अपने परिवार, लोकजीवन और देश से मन की गहराई तक जुड़ी हुई पढ़ी-लिखी, प्राचार्य प्राध्यापक, डाक्टर, अभियन्ता, लेखिका, कवयित्री और निरक्षर किन्तु 'शिक्षित' महिलाओं का समागम था। वे सभी आधुनिक थीं और उनमें आधुनिकतम बनने की बलवती लालसा भी थी, किन्तु वे न तो पश्चिम की परकटी और अर्धनग्न औरतों की तरह कामुकता की घूमती-फिरती उत्तेजक वस्तु बनकर सड़कों पर घूमने के लिए तैयार थीं और ना ही काला लबादा ओढ़कर अंधेरे में रहने के लिए। सामाजिक समरसता, नारी उत्थान, अधिकार और दायित्व उनके लिए अलग-अलग नहीं, उनका एकरस चिन्तन है।

यह भय है कि इस राष्ट्रीय हिन्दू महिला सम्मेलन को साम्प्रदायिक कहा जा सकता है। ये आरोप भी वे ही लगायेंगे जो भारत को नहीं, केवल पश्चिम और केवल अमेरिका को जानते हैं। जबकि इस सत्य को स्वीकार किये बिना भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य का सांगोपांग विचारन मंथन नहीं किया जा सकता कि यदि भारत का लोक और राष्ट्रजीवन सुधारना है, उसे विकसित, उन्नत और उसे आधुनिकतम बनाना है, लौकिक जीवन में समरसता एवं भौतिक समृद्धि लानी है तो यहाँ के पच्चासी प्रतिशत हिन्दू लोकजीवन को प्रेरित एवं चैतन्य करना होगा।

यह स्थापना मेरी नहीं इतिहास और अनुभव की है। पार्श्वनाथ और गौतम बुद्ध से लेकर गांधी, हेडगेवार, अम्बेडकर और यदि मानना ही हो तो काशीराम तक सभी हिन्दू समाज को ही सुधारने जगाने में लगे हैं। विदेशी शोध छात्र और बुद्धिजीवी भारतीय लोकशास्त्र, लोक विज्ञान और वांगमय का अध्ययन करने आते हैं तो उन्हें हिन्दू शास्त्र और संस्कृति का ही अध्ययन करना पड़ता है। अतएव हिन्दू सुधरेगा तो ही देश सुधरेगा, हिन्दू जागेगा तो ही राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्र का चिन्तन चलेगा।

देश के कोने-कोने से राजधानी में आई पचास हजार हिन्दू महिलाओं का समागम भारत राष्ट्र के उज्जवल भविष्य का द्योतक था। इस समागम की यह मनसा बहुत ही मुखर थी कि भारत की नारी कुरीतियों और अन्याय के साथ जी-जान से जूझेगी, भारत के राष्ट्रजीवन पर किए जा रहे आर्थिक और सांस्कृतिक आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति झोंककर वह संघर्ष तो करेगी ही, साथ ही अपने लिए परिवार, लोक और राष्ट्रजीवन के बीच तालमेल एवं समन्वय भी स्थापित करेगी। नारी का मातृत्व अर्थात् उसका माँ पक्ष जिस प्रखरता के साथ स्पष्ट हुआ उसमें किसी का निषेध या अस्वीकार नहीं था।

इस समागम ने वासना और पाप दृष्टि वाली पश्चिमी जीवन शैली के गुलामों को शिक्षा देने का भी कार्य किया कि भारत की नारी भोग्या नहीं, राष्ट्र की अमृत शक्ति है। भारतीय मनीषा ने नारी में पालक पोषक सृष्टि की संरचना एवं संस्कार के मूल तत्व का साक्षात्कार करने के बाद ही उसका बेटी माँ, बुआ माँ, भगिनी माँ, बहू माँ, मामी माँ, काकी माँ, बड़ी माँ, दादी माँ आदि की संज्ञा और सम्बोधन से श्रृंगार किया। भारत की मातृ और सन्त शक्ति की यह जागृति सम्पूर्ण संसार के मंगल और शुभ का संकेत है। वह नारियों का, नारियों द्वारा लोकजीवन को संस्कारित करने, देश की पुनर्रचना, उसकी अस्मिता तथा अस्तिव की रक्षा का अभियान प्रारम्भ करने वाला अपनी तरह का प्रथम समागम था। देशवासी इसकी फलश्रुति की प्रतीक्षा अवश्य करेंगे। प्रतीक्षा करनी भी चाहिए, क्योंकि जो कुछ उस दिन माँ ने बोला वह राजनीतिक प्रलाप नहीं, उसके हृदय की करुणा और आँचल की ममता की प्राणवन्त वाणी थी।

('भानुप्रताप शुक्ल समग्र', खण्ड 14 से साभार)

यह केवल भारत का ही नहीं सम्पूर्ण संसार का सौभाग्य है कि भारत के सन्त अपने आश्रमों और मठों से बाहर निकल आए हैं और भारत की नारी अपने चूल्हा-चौका, पालना और परिवार के साथ-साथ लोकजीवन को भी संस्कारित करने के लिए अपनी ड्योढ़ी लांघकर बाहर निकल आई है। अब परीक्षा और परख होनी है उन बुद्धिजीवियों या बुद्धिवादियों की जो देश-दुनियाँ का स्वयभू नियन्ता होने का दम भरते है। ये ऐसे लोग हैं कि यदि सन्त आश्रमों में रहकर ध्यान-धारणा करते हैं तो वे उन्हें हरामखोर और देश पर बोझा बताते है और यदि वे सामाजिक कुरीतियों को दूर करके राष्ट्रीय अस्मिता और परम्परा बोध जागृत करने के लिए गाँव-गाँव घूमकर लोक परिष्कार का अभियान चलाते है तो उन्हें राजनीति से दूर रहने की सलाह देते है।

अयोध्या के आकाश पर लहराया मातृशक्ति का भगवा...

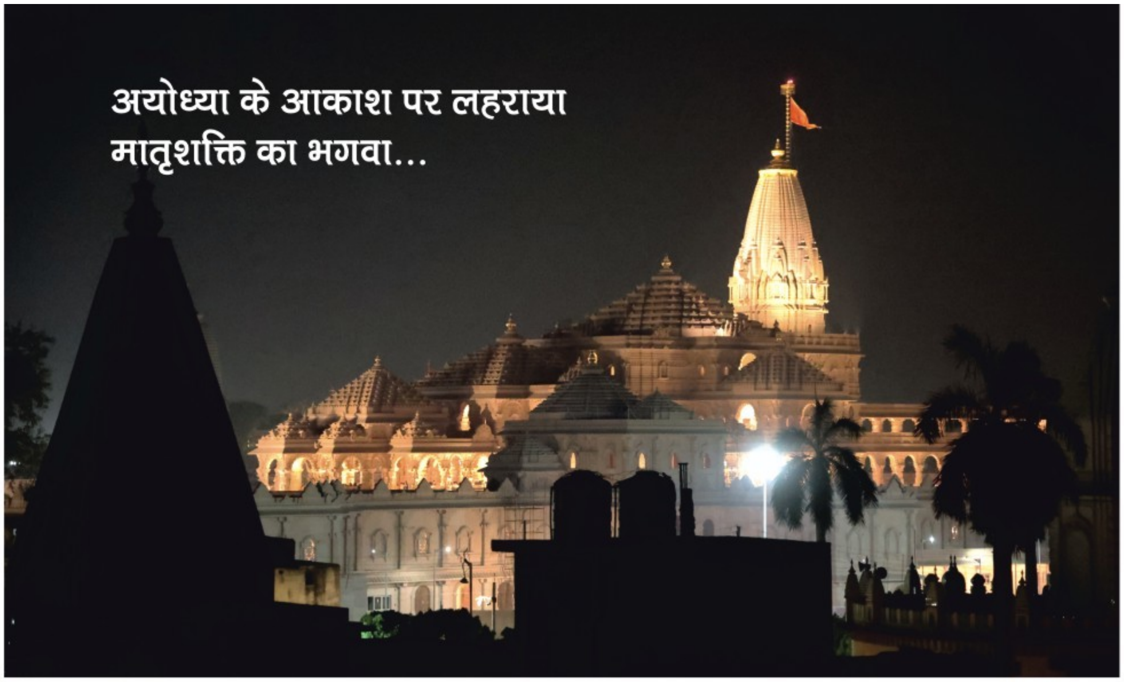

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर परिसर, अयोध्या में निर्मित श्री दुर्गा मंदिर पर लहराती धर्मध्वजा, जिसे एक भव्य समारोह में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के कर-कमलों द्वारा आरोहित किया

अयोध्या (उ.प्र.)

विगत 29 मई को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर परिसर का वातावरण अत्यन्त भावविभोर हो उठा, जब पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन कर-कमलों से यहाँ निर्मित माँ दुर्गा मन्दिर के उत्तुंग शिखर पर धर्मध्वजा फहराई गई। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के आयोजकत्व में यह समारोह पूर्ण रूप से 'मातृशक्ति' को समर्पित रहा। देश के अनेक राज्यों से पधारीं लगभग 3600 माता-बहनों ने इस आयोजन में भाग लेते हुए सनातन धर्म की रक्षा का संकल्प लिया। वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच धीरे-धीरे जब मंदिर के शिखर पर धर्मध्वजा का आरोहण हुआ तो ऐसा लगा मानों वह भारत की मातृशक्ति का यशोगान कर रही हो। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री पूज्या साध्वी निरंजन ज्योति जी, श्री चम्पतराय जी, पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी, श्री संजय भैया जी, साध्वी शिरोमणि जी, पूज्या साध्वी मैत्रेयी जी, श्री महंत डॉ.प्रज्ञा भारती जी, सुश्री मीनाक्षी ताई पिशवे, सुश्री प्रज्ञा मोहाला एवं सुश्री राजो मालवीया प्रमुख रूप से आयोजन में सम्मिलित हुए।

ध्वजारोहण से पूर्व यज्ञशाला में आचार्यों द्वारा विशेष वैदिक अनुष्ठान कराए गए, जिसमें पूज्या दीदी माँ जी के साथ मातृशक्ति एवं ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने पूर्ण विधि-विधान के साथ आहुतियाँ प्रदान कीं। इस महाआयोजन की सबसे विशिष्ट बात यह रही कि मंदिर परिसर के भीतर सुरक्षा से लेकर अतिविशिष्ट अतिथियों के मार्गदर्शन एवं आतिथ्य सत्कार की संपूर्ण कमान केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की महिला बटालियन ने संभाली। इस भव्य कार्यक्रम में प्रवेश के लिए विश्व हिन्दू परिषद, दुर्गा वाहिनी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की मातृशक्ति शाखाओं से जुड़ी महिलाओं को श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा आधिकारिक प्रवेशिकाएँ जारी की गई थीं। आयोजन केवल मातृशक्ति के लिए ही था।

श्री दुर्गा मंदिर, अयोध्या के दर्शन को जाते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

साथ हैं- श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के तत्कालीन महासचिव श्री चंपतराय जी, श्री संजय भैयाजी एवं अन्य गणमान्यजन

श्रीराम जन्मभूमि परिसर, अयोध्या के नवनिर्मित दुर्गा मंदिर में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन कर-कमलों से सम्पन्न हुए ध्वजारोहण के वीडियो देखने के लिए कृपया इन क्यू आर कोड्स को स्कैन करें।

श्री दुर्गा मंदिर, अयोध्या में आरोहण से पूर्व ध्वजा पूजन करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, साध्वी निरञ्जन ज्योति जी, साध्वी मैत्रेयी गिरि जी एवं अन्य गणमान्य मातृशक्ति

भारत की पुत्रियों को 'सिन्दूर' का अर्थ पता होना चाहिए

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

माँ ने हम सबको जीना सिखाया, देखना सिखाया, जीवन का मर्म बताया। जीवन की सार्थकता को निश्चित किया। इसलिए जब जननी बनती है। जननी कहलाती है, लेकिन जब संवार देती है, तभी माँ हो जाती है। ऐसी माताओं की जन्मीं आप सब मातृशक्ति को बहुत-बहुत प्रणाम करती हूँ।

22 जनवरी 2024 को हमारे खंडित स्वाभिमान की पुनः प्रतिष्ठा हुई थी। सीना तानकर, सिर ऊँचा करके चलने योग्य बन गए हम। किसके बल पर? पाँच सौ वर्षों की लंबी संघर्ष यात्रा! मेरे पूर्वजों ने पगड़ियाँ नहीं बांधी, पगथरा नहीं पहने! और इस युग की देवियों ने अपने दो-दो पुत्र रत्न श्रीराम जन्मभूमि को समर्पित किए। सरयू का जल कारसेवकों के रक्त से लाल किया गया। आज भगवती के मंदिर की ध्वजा चढ़ गई। लेकिन ध्वजा तो न जाने कब से चढ़ी है आसमान पर। भारत की स्त्रियों और नारियों ने जब अपने पुत्र, पति और अपने भाई श्रीराम जन्मभूमि को समर्पित कर दिए, उसी दिन आसमान पर धर्मध्वजा फहरा गई थी। आज मैं उन कारसेवकों का स्मरण करती हूँ, पूज्य श्रद्धेय श्री अशोक सिंघल जी सहित।

लो नमस्कार भूगोलों के, अभिनंदन लो आकाशों के
लो सप्त सागरों के प्रणाम, पदवंदन लो पातालों के
तुमने ही पुरी अयोध्या की खोई गरिमा लौटाई है
जो कील अवध के सीने में सदियों से पड़ी खटकती थी
लज्जित थी पीढ़ी दर पीढ़ी, जीवन को श्राप समझती थी
तुमने झटके से खींच उसे, फेंका सरयू के पानी में
फिर जग ने देखा एक बार, लहराता ज्वार जवानी में
हम केवल नहीं भजनिए हैं, ये बात तुमने समझाई है
ओ समर बांकुरों राघव के, तुमको सौ बार बधाई है।

मैं आप सब मातृशक्ति को एक ही बात का निवेदन करूंगी। यहाँ से जाओगे तो प्रसाद के रूप में प्रसाद मिलेगा, भगवती जगदंबा के माथे का सिंदूर। कोई भी देवी उस प्रसाद को लिए बिना न जाए। लेकिन वो प्रसाद जब घर जाएगा तो आपकी संतानों को पता होना चाहिए कि माथे के सिंदूर की कीमत क्या होती है। और ये जो उन्नत मस्तिष्क है, ये भगवती की स्मृति में जब रोली से श्रृंगारित हो जाता है, तभी भारत की स्त्री नारी शोभा पाती है। बताना होगा आपको अपनी पुत्रियों को कि जो भारत की स्त्री होने का जो अर्थ है, वो कुछ गहरा है। उन्हें समझाना होगा कि यदि आप चाहो तो भारत 'भारत' बना रहेगा। आपने चाह लिया था इसीलिए तो राक्षस हिरण्यकश्यप के घर में प्रहलाद का जन्म हो गया था। इसलिए अपनी शक्ति को पहचान कर अपने उत्तरदायित्व का बोध लेकर यहाँ से जाएँ।

आज की इस सभा में मैं श्रद्धेय श्री चंपतराय जी को धन्यवाद दूंगी कि उन्होंने हम सब दुर्गा वाहिनी की बेटियों को याद करते हुए आज यहाँ कुछ कहने का हमें गौरव दिया। मैं हमेशा उनकी ऋणी रहूंगी। आज हम सब संकल्प करें कि हमारी पुत्रियां लव जिहाद का शिकार कभी नहीं बनेंगी। हम संकल्प लें कि जब तक गौमाता के रक्त की एक बूंद भारत की धरती को व्याकुल कर रही है, तब तक हम चैन से नहीं बैठेंगे। हमें रामलला मिल गए, हमें कृष्ण जन्मभूमि भी मिल गई, हमें बाबा विश्वनाथ भी मिल गए लेकिन गौमाता के हत्या के कलंक के कारण हम बैचेन हैं। उस कलंक से हमें मुक्त होना चाहिए। पुत्रियों की मर्यादा मां निश्चित करेगी। और तुम्हें फिर सुनयना बनना होगा, कौशल्या बनना होगा, अंजनी बनना होगा, देवकी बनना होगा। उसकी उसकी योग्यता के लिए तैयार होना होगा।

इस संकल्प के साथ आज इस धर्मध्वजा का दर्शन करना कि ये युगों-युगों तक इसी तरह फहराती रहे। हम निर्बाध गति से युगों-युगों तक अपनी संतानों की, संतानों की, संतानों की संतानों के माध्यम से इस धर्म ध्वजा की संवाहक बनें, हमारी सन्तानें सनातन धर्म की रक्षक बनेंगीं, इस संकल्प को भी लेकर यहाँ से जाएंगे।

अयोध्या आगमन पर पूज्या दीदी माँ जी का श्रद्धापूर्ण अभिनंदन करते हुए श्री चंपतराय जी एवं मातृशक्ति

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी दुर्गा एवं अन्य गणमान्यजन मन्दिर परिसर का दर्शन करते हुए

श्री दुर्गा मन्दिर 'ध्वजारोहण' महोत्सव को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

पुण्यभूमि अयोध्याजी का मेरा भावपूर्ण संस्मरण

– साध्वी शिरोमणि गिरि

वृन्दावन 'वात्सल्य की धरा' से निकले और अयोध्या जी की पावन भूमि में पहुँचते पहुँचते स्मृतियाँ सजल हो उठीं। अस्सी नब्बे के दशक की वो सारी यादें चलचित्र की तरह अपने चित्रों सहित रंग बिखेरने लगीं :

संगठन गढ़े चलो सुपंथ पर बढ़े चलो
भला हो जिसमें राष्ट्र का वो काम सब किए चलो।

तब देश के कोने कोने से दुर्गावाहिनी की युवतियों के स्वर गुंजायमान होते थे। अभ्यास वर्ग, शौर्य प्रशिक्षण शिविर, लगातार। विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष प्रबल था और एक अद्भुत आभा, तेजस्विता का दर्शन करने और वाणी के ओज को सुनने चारों तरफ हजारों जनों का हुजूम उमड़ा पड़ता था। दिल्ली के इंदिरा गांधी ताल कटोरा स्टेडियम में देश के विभिन्न प्रांतों से पचास हजार दुर्गावाहिनी की बहनों की विराट उपस्थिति ने हमारी आराध्या वात्सल्यमूर्ति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी को दुर्गावाहिनी की प्रथम राष्ट्रीय संयोजिका के रूप में सुना। शौर्य, उत्साह, उमंग का ऐसा सिलसिला चल पड़ा कि दुर्गावाहिनी के शौर्य प्रशिक्षण शिविर हों, संत सम्मेलन हों, बजरंग दल के आयोजन हों, गौ संवर्धन एवं संरक्षण आंदोलन हों या फिर घर वापसी कार्यक्रम, सबको केवल और केवल पूज्य दीदी ऋतम्भरा जी को ही सुनना होता था। वो क्रांति का एक ऐसा दौर था, जिसके असंख्य योद्धाओं की सेनापति थीं हमारी आराध्या। एक ही संकल्प चारों ओर था 'सौगंध राम की खाते हैं, हम मंदिर वहीं बनाएगें।'

6 दिसंबर 1992 के बाद 'सौगंध राम की खाते है, हम मंदिर भव्य बनायेंगें' संकल्प के साथ 22 जनवरी 2024 को प्रभु श्रीरामलला 'टाट से उठकर ठाठ में' पहुँच गए। संपूर्ण विश्व के सनातनियों के गौरव और स्वाभिमान की पुर्नस्थापना हो गई। इसके बाद 29 मई 2026 को एक और ऐतिहासिक गौरव की कड़ी बनने जा रही है, इसकी अनुभूति आनंदातिरेक पैदा कर रही थी। इन्हीं स्मृतियों के बेखौफ जंगलों से गुजरते हुए हम पहुँच गए, अपनी मंजिल 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र भवन।'

देश के कोने-कोने से आईं दुर्गावाहिनी और मातृशक्ति की माता बहनों के 'जय जय श्रीराम' उद्घोष से अयोध्या नगरी गुंजायमान हो रही थी। कोई सरयू स्नान तो कोई परिक्रमा में आनंदित। पर आँखें प्रतीक्षारत कि पूज्य दीदी माँ जी कब आयेगीं? कब उनके दर्शन होगें? हमारी प्रतीक्षा की घड़ियाँ पूरी हुई हमारी आराध्या पधारीं। स्वागत, वंदन, अर्चन, पुष्प वर्षा और अश्रु वर्षा संग हमारी आदरणीय मीनाक्षी ताई का पूज्य दीदी माँ जी से आत्मिक मिलन दोनों ओर से अश्रुपात। पूज्य दीदी माँ जी के प्रत्यक्ष दर्शन से भावविभोर आँखें भी रिमझिम बारिश से भीग रही थीं। परमानंद था और आराध्या के दर्शन संग उनकी आरती के परम सुख के साथ अयोध्या जी की पावन धराधाम में महोत्सव के पूर्व की एक अनमोल संध्या आनंद के सागर में हिलोरें ले रही थी।

नौतपा की भीषण गर्मी, लू का चारों तरफ तांडव। बाहर निकलना अर्थात् कोई बहुत बड़ा युद्ध लड़ने की तैयारी करने जैसा हो। प्रातः भगवान के दर्शन के लिए जाना, पाँच बजे से ध्वजारोहण के लिए पहुँचना। गर्मी प्रचंड थी, कुछ बहिनों को दोपहर में लू भी लग गई लेकिन हम तो पूर्णतः निश्चिन्त थे। क्योंकि जिनके जीवनाधार प्रभु और जो भगवती माँ सर्वमंगला की उपासिका, हजारों मातृशक्ति और बेटियों को लेकर मंदिर परकोटे में भगवती माँ दुर्गा के मंदिर में ध्वजारोहण के लिए पधारी जो थीं।

प्रातः चार बजे इंद्रदेव भगवान ने जो कृपा की वो सात बजे तक जारी रही। ज्यादातर जन सरयू स्नान को नहीं जा पाए, परिक्रमा नहीं हो पाई लेकिन फिर इतना सुंदर सुहावना मौसम बना, जैसे प्रभु श्रीराम कह रहे हों 'आप सब रामलला के दर्शन को आए हो ना और भगवती के मंदिर के ध्वजारोहण का परम् सुख लेने। दीदी माँ के संग तुम सबने मुझे टाट से ठाठ में लाने के लिए जो संघर्ष किया। तो आओ आज अपनी भगवती संग मेरे दर्शन और भगवती मंदिर के ध्वजारोहण से अभिभूत हो जाओ।'

संध्याकाल में भगवती माँ दुर्गा मंदिर का ध्वजा पूजन और ध्वजारोहण इतना अदभुत और वंदनीय रहा कि हरेक जन वहाँ माँ की दिव्य आराधना में मग्न हो गया। आराध्या की वाणी के महाप्रसाद ने पूरे मंदिर को शौर्य और पराक्रम के स्वरों से गुंजायमान कर दिया। सबने अपने दोनों हाथों की मुट्ठी बाँध गौमाता और बेटियों के संरक्षण, नदियों की निर्मलता का संकल्प धारण किया।

हमारे लिए ये सब ऐसा था जैसे एक सार्थक जीवन की पूर्णता हो गई। रोम-रोम पुलकित था। आती-जाती साँसें कृतज्ञता व्यक्त कर रही थीं अपने संगठन की, जिसके कारण हमें हमारी आराध्या मिलीं और जिन्होंने हमारे जीवन को श्रद्धा, आस्था, निष्ठा, परिश्रम और समर्पण की पूंजी प्रदान कर हमें पुण्यधाम अयोध्या पर स्वर्गानुभूति से जीने का महाप्रसाद प्रदान कर किया।

श्री हरिसेवा आश्रम, हरिद्वार में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ जी। निकट ही व्यासपीठ पर विराजमान हैं कथाव्यास पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री हरिचेतनानन्द जी महाराज

पराजित मनोवृत्ति को उमंग से भर देते हैं सन्त-महापुरुष

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

आप सब बहुत भाग्यशाली हो। सन्तों के चरणों में बैठना, अपने गुरुदेव के चरणों में बैठना, उनके नेह को, उनके स्नेह को उनके आशीर्वादों को उनकी अमृत तुल्य वाणी को श्रवण करना; ये बिना पुण्यों के परिपाक से संभव नहीं है। और कदाचित कभी पुण्यों का परिपाक हो जाए आप अपने गुरुदेव को पा ले उनकी वाणी भी श्रवण कर ले। लेकिन उनके वाणी के प्रति, उनके चरणों के प्रति, उनके व्यक्तित्व के प्रति अगर अगाध प्रेम ना हो तभी आप गीत गा रहे थे ना की मेरे गुरुदेव आपके प्यार ने आपसे हमको जोड़ दिया है। और जब प्रीत से गुरु जोड़ते हैं पात्र अपात्र दिखते नहीं। क्योंकि अगर पात्रता देखने लगेंगे तो हम तो अपात्र ही सिद्ध होंगे।

मेरी जन्मभूमि के पास ही 'खन्ना' एक जगह है, जहाँ पर त्रिवेणी वाले महाराज जी विराजमान होते थे। वो कभी-कभी प्रातः भी आते तो उनकी खड़ाऊ की खटपट सुनते ही मेरी माँ कहती थीं कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि बिना निमंत्रण के हमारे गुरुदेव हमारी झोपड़ी में आ गए। इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा! ध्यान रखना देवियों कि दरिद्रता बाहर उतनी नहीं होती जितनी भीतर मन में होती है। 'हम परमात्मा की सृष्टि के सम्राट हैं' ये बात या तो माँ बताती है या गुरु बताते हैं। वो सम्राट बनाते हैं। जैसे अभी पूज्य महाराजश्री कह रहे थे ना कि युगपुरुष भगवान की वाणी सुन-सुनकर हम लोग बड़े हुए, हमारा साधना काल परितप्त हुआ। उन्होंने बताया की मन की जो चालाकियाँ समझ जाता है, मन की तरंगों को मारना सीख जाता है, वो सम्राट हो जाता है। गुरुदेव कहते हैं कि आप अपने स्वरूप में स्थित हो जाओ तो कौन बेचारा, कौन अमीर, कौन गरीब, कौन स्त्री, कौन पुरुष।

यहाँ व्यासपीठ पर विराजमान पूज्य महाराजश्री का कितना सुंदर नाम है हरि चेतनानन्द जी। देह की चेतना नहीं, मन की चेतना नहीं, उस परम सत्ता से जुड़ी हुई चेतना! गुरुदेव की वाणी कहती है कि तेरा अपना स्वरूप, सुख स्वरूप है। अपने आप को पहचान और जो लाभ-हानि के तराजू में स्वयं को तौल कर हीन भावना का शिकार बना बैठा है, उससे मुक्त हो जा। सन्त-महापुरुष कहते हैं कि :

जो मिला है वो हमेशा पास रह सकता नहीं
कब बिछुड़ जाए ये कोई राज कह सकता नहीं
जिंदगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया
मैं नहीं मेरा नहीं ये तन किसी का है दिया
जो भी अपने पास है वो धन किसी का है दिया।
देने वाले ने दिया वो भी दिया किस शान से
पर लेने वाला 'मेरा है' ये कह उठा अभिमान से
'मेरा है' ये कहने वाला मन किसी का है दिया।

तो फिर हमें क्या करना चाहिए?

जग की सेवा खोज अपनी प्रेम हरि से कीजिए
जिंदगी का राज है ये जानकर जी लीजिए
साधना की राह पर साधन किसी का है दिया
मैं नहीं मेरा नहीं ये तन किसी का है दिया।

आज जो लिए बैठे हैं वो किसी से मिला है। शरीर माँ पिता से मिला है। संस्कार गुरुदेव से मिला है। पुण्य की वृत्ति महापुरुषों के सत्संग से मिली है।

सन्तों का प्रेम भी निष्काम और निर्दोष होता है, जो आपको धन्य करता है। पूज्य महाराज जी अपने सानिध्य से, अपनी वाणी से प्रत्येक सभा को अभिमंत्रित करते हैं, मंत्र मुग्ध कर देते हैं। सोई हुई प्रवृत्ति को जागृत कर देते हैं। पराजित मन वृत्तियों में उमंग और उत्साह भर देते हैं। आपको श्रवण करना बहुत अद्भुत अनुभव देता है। मैं आपकी व्यासपीठ को प्रणाम करती हूँ।

इस आलेख का वीडियो देखने के लिए इस क्यू आर कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करने के बाद दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें

पूज्य गुरुदेव के चरणों में...

इस पेज का वीडियो देखने के लिए इस क्यू आर कोड को अपने मोबाइल से स्कैन करने के बाद दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें

विगत 18 से 22 जून तक पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा ने अपने उत्तराखण्ड प्रवास पर हरिद्वार पहुँचकर अपने पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष महामंडलेश्वर स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। चित्र उसी अवसर के हैं।

निष्ठा दिवस समारोह का वीडियो देखने के लिए अपने मोबाइल से इस क्यू.आर.कोड को स्कैन कर दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें।

सलाह नहीं, साथ दो...

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

संजय भैयाजी के जन्मदिन को 'निष्ठा दिवस' क्यों कहा गया है? किसी व्यक्ति के जीवन में अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्टता हो कि मेरा लक्ष्य यह है और इसे लेकर कोई किंतु-परंतु नहीं है, कोई द्वंद नहीं है। ऐसे लक्ष्य को पाने के लिए पूर्ण समर्पण चाहिए। आप विचार करो कि चार्टर्ड अकाउंटेंट बनना तो आसान नहीं होता। बड़ी मेधावी बुद्धि चाहिए, श्रम चाहिए। इससे भी बड़ी बात कि जब आप एक सफल सी.ए. बन जाओ, तब आप उसे किसी परमार्थ के लिए त्याग दो!

परमशक्ति पीठ की स्थापना के बाद जब मेरे मन में विचार आया कि अब मुझे वात्सल्य ग्राम खड़ा करना है, तो भैयाजी ने मेरे किसी श्रेष्ठ सामाजिक कार्य में अपने योगदान के संकल्प का स्मरण करके अपनी उस बहुत बड़ी प्रैक्टिस को छोड़कर अपरिग्रही भाव से, अकिंचन बनकर गुरुदेव की आज्ञा से परमशक्ति पीठ को अपना जीवन समर्पित कर दिया। भैयाजी एकनिष्ठ हुए। वो भगवा वस्त्र पहन भी सकते थे लेकिन क्यों उन्होंने ऐसा नहीं किया? क्योंकि जब आप भगवा वस्त्र धारण करते हो, संन्यास की दीक्षा लेते हो तो आपको शिखा सूत्र का त्याग करना होता है और जो शिखा सूत्र का त्याग कर देता है वो लौकिक कार्य नहीं कर सकता।

अब वात्सल्य परिवार की पुत्रियों का कन्यादान करना है। मुझे पिता की भूमिका निभानी है। इसलिए उन्होंने अपने शिखा सूत्र का त्याग नहीं किया। जिस दिन वात्सल्य परिवार की किसी बेटी का कन्यादान होता है, भैयाजी उस दिन उपवासे रहकर सारा दिन वैवाहिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। जिनके मन में अहर्निश परमशक्ति पीठ और वात्सल्य ग्रामों के उत्कर्ष का ही विचार और कृतित्व बना रहता हो तो ऐसे निष्ठावान जीवन का जन्मदिन ही 'निष्ठा दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

मैंने प्रायः देखा है कि भैयाजी तो कई बार 24 जून को कहीं बाहर जाने की योजना बना लेते हैं, वो इस दिन यहाँ रहना नहीं चाहते क्योंकि उन्हें संकोच होता है, वो नहीं चाहते अपनी प्रतिष्ठा। हमेशा विचार करती हूँ कि जिस सामाजिक कार्य के लिए मुझे 'पद्म भूषण' सम्मान प्राप्त हुआ, वात्सल्य का वो सारा कार्य तो भैयाजी और वात्सल्य ग्राम की माताओं ने किया। वात्सल्य ग्राम की चारदीवारी में रहकर संतानों का लालन-पालन करना और बाहर के मोह का त्याग कर देना, लोकेष्णा छोड़ देना, यह तो कभी-कभी साधु के बस की बात भी नहीं होती, जो हमारी माताओं ने किया है। अब 'निष्ठा दिवस' को मनाने का उद्देश्य क्या है? यहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने जीवन में निष्ठा के साथ जिए। हमारा मन, वचन और कर्म एक हो। इससे हमारी निष्ठा सुदृढ़ होती है।

एक बार नदी में बड़ा जलप्लावन हुआ। पेड़ों तक उठती लहरों में एक चिड़िया का घोंसला पानी में जा गिरा। उसमें कुछ अण्डे और बच्चे थे। अब चिड़िया सोच रही है मैं इनको कैसे बचाऊँ। तो चिड़िया ने क्या किया? नदी का पानी चोंच में भर-भरकर बाहर करना शुरू किया। मुझे मेरे बच्चे बचाने हैं, ये उसकी निष्ठा थी। दूसरे पक्षियों ने कहा कि 'तू पागल है, चोंच भर पानी से क्या ये नदी सूख जाएगी?' तो चिड़िया ने कहा कि 'सलाह मत दो, साथ दो।' उसकी ये बात सुनकर सारे पंछी चोंच भर-भरकर नदी के पानी को बाहर फेंकने लगे। ये समाचार पहुँच गया, पक्षीराज गरुड़जी के पास। वो भी पक्षियों के इस प्रयास पर हँसते हुए उनसे बोले कि 'क्या ऐसा करने से नदी सूख जाएगी और चिड़िया को उसके बच्चे मिल जाएंगे?' पक्षियों ने कहा कि 'प्रभु, सलाह नहीं साथ दीजिए।'

यह सुनकर पक्षीराज को भी प्रेरणा मिली उन्होंने विष्णु भगवान से कहा कि 'प्रभु, मुझे आपकी सेवा से दो दिनों का अवकाश चाहिए क्योंकि मुझे पक्षियों की सहायता करने के लिए धराधाम पर जाना है।' भगवान बोले कि 'भला कभी ऐसा होता है क्या गरुड़? सारे पंछी चोंच में पानी भरेंगे तो क्या नदी सूख जाएगी?' गरुड़जी करबद्ध होकर बोले कि 'प्रभु सलाह नहीं, साथ दीजिए।' अब तो स्वयं श्रीहरि भी प्रेरित हुए और उन्होंने नदी से कहा कि 'लौटा दो चिड़िया के बच्चे।'

निष्ठा यह होती है कि जो श्रीहरि को भी प्रेरित कर दे, संकल्प की सिद्धि की यात्रा में साथ खड़े होने के लिए। इसको 'निष्ठा' कहते हैं। सेवा की इस यात्रा में हमें समाज ने दिया है और किसी का ऋण लेकर जिया नहीं जा सकता। समाज का ऋण उतारने में आप अपनी योग्यता का उपयोग करेंगे, ऐसी निष्ठा आप सबकी बनी रहे।

भैयाजी की निष्ठा कितनी प्रिय है मेरे पूज्य गुरुदेव को, जिन्होंने अभी पिछले ही दिनों एक चर्चा के दौरान मुझसे कहा कि यदि मेरे इस शिष्य का किंचित् मात्र भी अपमान होता है, तो समझना कि वह मेरा अपमान है।'

विगत 24 जून को परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी का जन्मदिन 'निष्ठा दिवस' के रूप में मनाया गया। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में वात्सल्य परिवार द्वारा आयोजित इस समारोह को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी श्री वेदानन्द जी महाराज एवं स्वामी श्री सन्तोषानन्द जी महाराज ने भी भैयाजी को शुभकामनाएँ प्रदान कीं। प्रातःकाल से ही परिसर में यज्ञानुष्ठान प्रारंभ हुए। वात्सल्य परिवार के सभी बच्चों, यशोदा माताओं एवं अन्य सभी सदस्यों ने इस अवसर पर भैयाजी के स्वस्थ, दीर्घायु एवं कर्मनिष्ठ जीवन की प्रार्थना की।

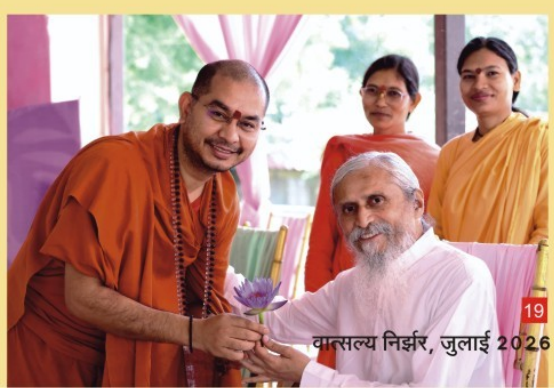

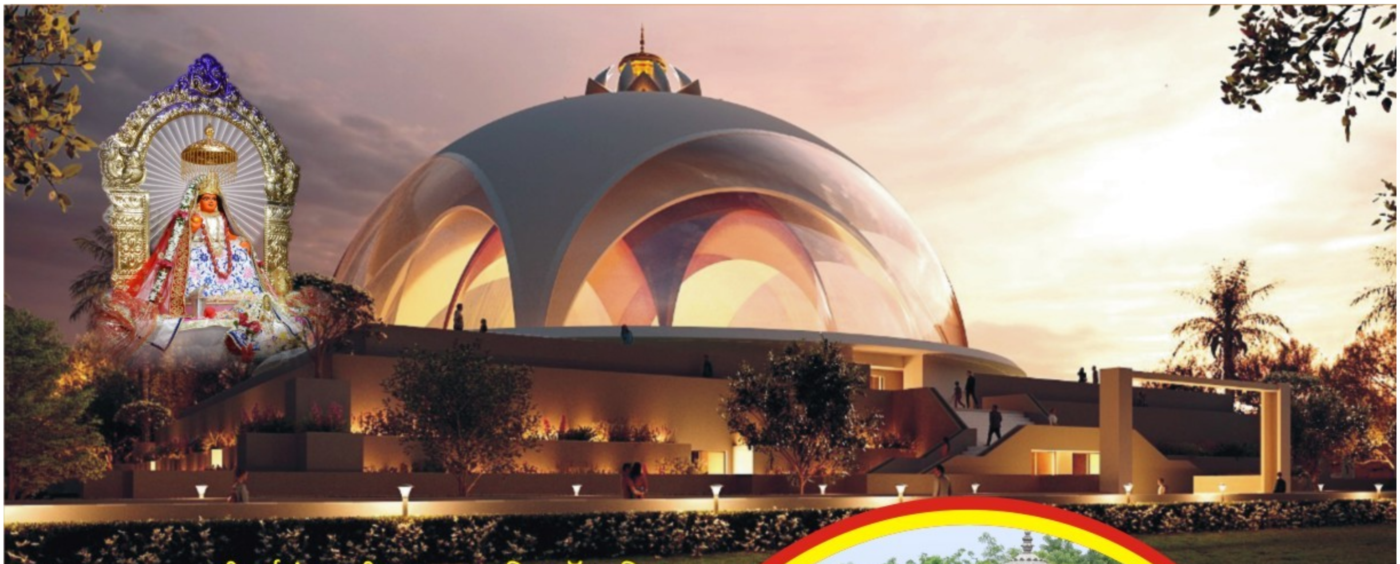

श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

सहयोग हेतु सम्पर्क करें

परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज,
नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name : Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No. : 6023000100098186
IFSC Code : PUNB0602300
Branch Name : Mandawali, Delhi

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का गुजरात प्रवास

महीषा, डाकोर (गुजरात)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने अपने चार दिवसीय गुजरात प्रवास पर विगत 10 जून को अहमदाबाद विमानतल पहुँची। यहाँ से आपने डाकोर स्थित ग्राम महीषा में निर्मित किये गए वात्सल्य ग्राम की ओर प्रस्थान किया, जहाँ पहुँचने पर परमशक्ति पीठ, गुजरात के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा आपकी आत्मीय अगवानी की गई। यहाँ आयोजित वात्सल्य गंगा शिविर की शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ जी ने अपने संबोधन में उन्हें मार्गदर्शित किया। 12 जून को डाकोर सर्किट हाउस में पूज्या दीदी माँ जी के पावन सानिध्य में परमशक्ति पीठ गुजरात इकाई द्वारा बेटियों के लिए गुजरात में एक सैनिक स्कूल की निर्माण योजना सहित अन्य विभिन्न योजनाओं के सन्दर्भ में एक बैठक का आयोजन भी किया गया। इसमें प्रमुख रूप से श्री संजय भैयाजी, पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी, स्वामी श्री सूर्यानन्द जी, सुश्री स्वास्तिका, श्री परमेन्दुभाई (काकूभाई), श्री नानालाल शाह, श्री नीलेश मांडलेवाला, श्री महेशभाई सवाणी, श्री सी.पी.वनाणी, श्री प्रवीण पटेल, श्री दशरथ भाई, श्री विवेक पटेल, श्री सुनील त्रिवेदी, श्री अशोक बजाज, श्री अरविन्द अग्रवाल, श्री जयप्रकाश अग्रवाल, डॉ.रामकुमार जोशी, श्री जे.पी.अग्रवाल, श्री बसंत भाई, श्री संजय पटेल एवं श्री दक्षेस भाई सम्मिलित हुए। पूज्या दीदी माँ जी ने यहाँ श्री रणछोड़राय मन्दिर में भगवान के दिव्य दर्शन करने के साथ ही नड़ियाद स्थित श्री सन्तराम मन्दिर पहुँचकर वहाँ सनातनी संस्कारों के संरक्षण एवं संवर्धन की विभिन्न योजनाओं को भी देखा।

पूज्या दीदी जी का गुजरात आगमन एवं वात्सल्य ग्राम, महीषा में स्वागत, वन्दन के बाद प्रकल्प अवलोकन के दृश्य

वात्सल्य गौरव

'पद्मश्री' विभूषित श्री नीलेशभाई मांडलेवाला

सूरत, गुजरात

गुजरात के ख्यात उद्योगपति, संस्था 'डोनेट लाइफ' के माध्यम से ब्रेनडेड लोगों के अंगदान प्राप्त करवाकर उन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचाकर उनकी जिंदगियाँ बचाने वाले गुजरात के 'ऑर्गन मैन' तथा संस्था 'परमशक्ति पीठ' के विशिष्ट सहयोगी श्री नीलेशभाई मांडलेवाला का स्वागत कर उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

उल्लेखनीय है कि श्री नीलेशभाई ने 12 जनवरी 2006 को हुए गुजरात के पहले इंटरसिटी किडनी डोनेशन ओर प्रत्यारोपण के साथ इस सेवा यात्रा की शुरुआत की थी। उनके इस सेवाकार्य के फलस्वरूप अभी पिछले ही दिनों भारत की राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' अलंकरण से विभूषित किया गया है।

वात्सल्य गंगा शिविर की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भावविभोर श्री काकूभाई, पूज्या दीदी माँ जी एवं साध्वी साक्षी चेतना जी

वात्सल्य ग्राम, महीषा में वात्सल्य गंगा प्रशिक्षण शिविर समापन एवं डाकोर सर्किट हाउस में परमशक्ति पीठ बैठक के दृश्य

गुजरात के डाकोर स्थित श्री रणछोड़राय मन्दिर में भगवान के श्रीविग्रह का दर्शन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

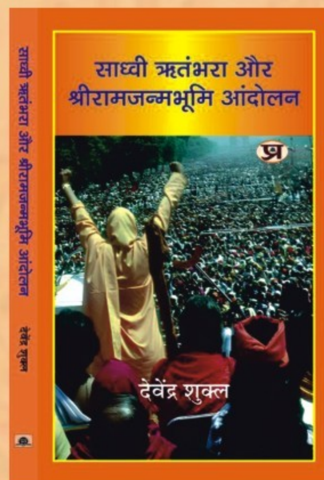

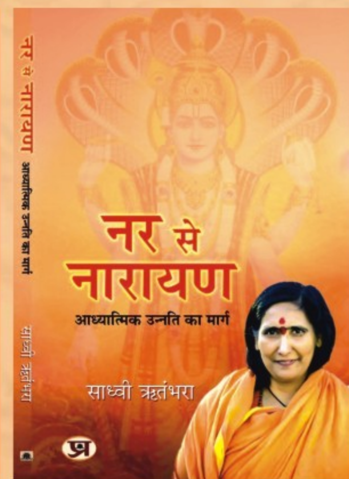

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

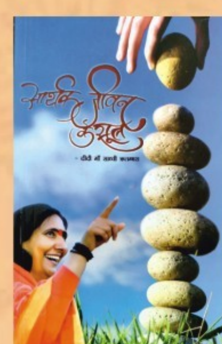

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

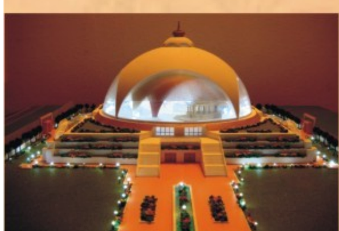

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	
	11,00,000/-

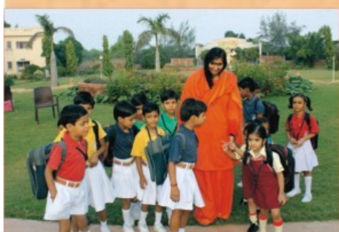

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

•For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
•For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

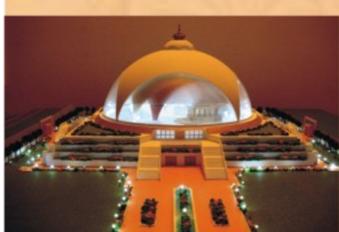

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया
इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट :** www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ________________________________

व्यवसाय ____________

पता ________________________________

________________ पिनकोड __________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ________________________

दान राशि (अंकों में) __________ (शब्दों में) ________________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ________________

राष्ट्रकवि श्री हरिओम पवांर
अमृत महोत्सव भावाभिनन्दन

मेरठ, उत्तरप्रदेश में आयोजित राष्ट्रकवि श्री हरिओम पंवार के 'अमृत महोत्सव' में उन्हें भावाभिनन्दन पत्र भेंट कर उनका सम्मान करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी। साथ हैं - पूज्य योगगुरू बाबा रामदेव जी एवं पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द मुनि जी महाराज

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are

Mr./Mrs/Ms :...

Occupation :...

Address :...

....Pin Code........................

Phone No. :............................ Mobile No. :..............................

email :..

Donation Amount (In digits) :......................(In words)..........................

....Permanent A/c No..

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank
A/c. No. : 1518000101014134
IFSC Code : PUNB0151800

Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

इस आलेख को सुनने के लिए इस क्यू आर कोड को स्कैन करने के बाद दिखाई दे रही लिंक पर क्लिक करें

वर्षा ऋतु और श्रावण मास ही महत्ता (भाग-1)

–रमेश रंजन त्रिपाठी

अपनी धुरी पर साढ़े तेईस डिग्री झुकी हुई पृथ्वी अंडाकार पथ में परिभ्रमण करते हुए सूरज का चक्कर लगाती है। इसलिए धरती के उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध सूर्य के पास और दूर आते-जाते रहते हैं। पृथ्वी पर अलग-अलग मौसमों के लिए प्रमुख रूप से यही परिचालन उत्तरदायी होता है। धरा के जिस हिस्से पर सूरज की किरणें सीधी और तेज पड़ती हैं वहाँ गर्मी और उसके विपरीत भाग में सर्दी पड़ती है। भूमध्य रेखा के आसपास के क्षेत्रों में पूरे साल सूरज की किरणें लगभग सीधी पड़ती हैं इसलिए वहाँ अधिकांश समय गर्मी रहती है और सूखा तथा बारिश, दो मौसम हुआ करते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में भास्कर अपनी प्रचंड तप्त किरणों से धरती के जल को सोख लेते हैं। सभी प्राणी और वनस्पतियाँ पानी के लिए छटपटाने लगती हैं। सबके प्राणाधार सूर्य देव अवशोषित जल को ब्याज सहित वर्षा काल में बारिश के जरिए वसुंधरा को लौटा देते है। सभी जीवों को राहत मिलती है। ऐसा लगता है जैसे प्रकृति धरती का जलाभिषेक कर रही हो। हमारे देश में दो-दो महीने की छह ऋतुएँ होती हैं- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर। धरती पर जीवन की प्राथमिक आवश्यकता हवा, पानी और भोजन है। भोजन कैसा भी हो, उसका प्रमुख आधार पानी होता है। भूख मिटाने के सबसे बड़े साधन अनाज की खेती के लिए पानी की आपूर्ति जरूरी होती है। इसीलिए कृषि प्रधान भारत में वर्षा का महत्व सबसे अधिक है। यद्यपि धरती के पाँच प्रमुख महासागरों में असीम जलराशि उपलब्ध है लेकिन खारा होने के कारण उसे पिया नहीं जा सकता। जब नहरें, बोरवेल या सिंचाई के मशीनी साधन नहीं थे, तब किसान वर्षा पर निर्भर थे। आषाढ़ माह के अंतिम पखवाड़े में आकाश में बादल छाने लगते और कृषक फसल उगाने की तैयारी में जुट जाते। जमीन की तैयारी, बुवाई, सिंचाई, फसल की देखभाल, कटाई और गहाई कर अनाज घर में लाना। इसी काम में वह आठ-दस महीने व्यस्त रहता था।

ज्येष्ठ और आषाढ़, दो महीने कुछ फुर्सत के होते थे जिसमें वह अपने जरूरी पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक काम पूरे करता था। यही कारण है कि अधिकांश शादियाँ गर्मियों में होती थीं। ससुराल गई बहनों को भाई सावन में मायके ले आते थे। सावन और भादों दो महीने वर्षा ऋतु के हैं। बाढ़, जलभराव और भूस्खलन आदि के चलते मानवीय गतिविधियाँ और आवाजाही प्रभावित होती है। यहाँ तक कि किसी एक स्थान पर अधिक समय न टिकने वाले साधु-संत भी चातुर्मास के लिए ठहर जाते हैं। गृहस्थों की दिनचर्या में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के लिए तीज-त्योहार, व्रत-उपवास बढ़ जाते हैं। नागपंचमी, रक्षाबंधन, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, हरतालिका व्रत, गणेश चतुर्थी, अनंत चतुर्दशी, पितृपक्ष, नवरात्र, दशहरा, दीपावली आदि इन्हीं दिनों मनाई जाती हैं। इसी समय सूर्य देव छह महीनों के लिए दक्षिणायन हो जाते हैं। धार्मिक मान्यता है कि आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि से चार महीने के लिए भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं।

चातुर्मास में वातावरण के बदलावों से तन-मन को स्वस्थ रखने के लिए अनेक धार्मिक रीति रिवाजों को दिनचर्या का अनिवार्य अंग बना दिया गया। भारी वर्षा, नमी का बढ़ना, तापमान में उतार-चढ़ाव, हवा और आँधियों में परिवर्तन, जीव-जंतुओं की हलचल, जलभराव आदि प्राकृतिक उथल पुथल को ध्यान में रखते हुए रहन-सहन, खानपान के लिए नियम बनाए गए। धार्मिक ग्रंथों में संयमित जीवन को महत्ता दी गई। सावन में पत्तेदार सब्जियां, भादों में दही, आश्विन में दूध उत्पाद और कार्तिक में दालों से परहेज की धार्मिक मान्यता आध्यात्मिक लाभ के साथ स्वस्थ रहने के लिए भी जरूरी है। आयुर्वेद भी भोजन में ऐसे परहेज का समर्थन करता है। निरोग रहने के लिए लंघन करना अच्छा होता है। इन चार महीनों में व्रत, उपवासों की प्रचुरता का बड़ा कारण यह भी है।

चातुर्मास से कुछ रोचक धार्मिक मान्यताएँ भी जुड़ी हुई हैं। वामन अवतार में दैत्यराज बलि की दानशीलता से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें वरदान दिया था कि चातुर्मास में वे पाताल लोक में उनके यहां निवास करेंगे। देवशयनी एकादशी से देवउठनी एकादशी तक चार महीने भगवान विष्णु के पाताल लोक में शयन करने पर सृष्टि के संचालन का दायित्व भगवान शिव संभालते हैं। देवउठनी एकादशी में श्रीहरि के योगनिद्रा से जागने के बाद कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को शंकर भगवान उन्हें ब्रह्मांड का कार्यभार वापस सौंपते हैं। यह विशिष्ट पर्व 'हरिहर मिलन' के नाम से विख्यात है। काशी के विश्वनाथ मंदिर और उज्जैन के महाकाल मंदिर में इस महापर्व को धूमधाम से मनाया जाता है।

युवाओं के लिए

रोजगार मार्गदर्शन

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) आज के समय की सबसे क्रांतिकारी तकनीक बन चुकी है। यह न केवल उद्योगों को बदल रही है, बल्कि करियर और रोजगार के मोर्चे पर भी असीम संभावनाएँ पैदा कर रही है।

ए.आई. तकनीक क्या है?

इसका सीधा मतलब है मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने के काबिल बनाना।

जेनरेटिव ए.आई. : आज के समय में सबसे लोकप्रिय तकनीक है। यह टेक्स्ट, इमेज, कोड और वीडियो खुद से तैयार कर सकती है।

मशीन लर्निंग : इसके माध्यम से मशीनें डेटा से खुद सीखती हैं और इंसानी भाषा को समझकर उसका जवाब देती हैं।

ए.आई. में करियर बनाने के लिए नए कोर्सेस

इस तकनीक के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए कई वैश्विक और भारतीय संस्थानों ने इसके लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए कोर्सेस शुरू किए हैं।

बेसिक और फाउंडेशन कोर्सेस

1. डीप लर्निंग ए.आई. कोर्स : यह एंड्रयू एनजी द्वारा तैयार यह कोर्स गैर तकनीकी लोगों और शुरुआती छात्रों के लिए सबसे अच्छा है।
2. गूगल ए.आई.एसेंसशियल / फाउंडेशन ऑफ डेटा एंड ए. आई. : यह डेटा साक्षरता, बुनियादी सांख्यिकी और ए. आई. के व्यावसायिक उपयोग को समझने में मदद करता है।

एडवांस और जॉब ओरिएंटेड कोर्सेस

1. ए.आई.इंजीनियरिंग एंड पायथॉन : यह कोर्स आपको प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग और वास्तविक ए.आई. ऐप्स बनाना सिखाता है।
2. एग्जीक्यूटिव्ह पी.जी.इन मशीन लर्निंग एंड ए.आई. : इसके लिए आई.आई.टी.बैंगलोर जैसे शीर्ष भारतीय संस्थान कामकाजी पेशेवरों के लिए डिग्री और डिप्लोमा कोर्सेस दे रहे हैं।
3. क्लाउड ए.आई.सर्टीफिकेशंस : इसके अन्तर्गत ए.डब्ल्यू. एस.सर्टीफाइड ए.आई.प्रेक्टीशनर्स, गूगल प्रोफेशनल मशीन लर्निंग इंजीनियर और माइक्रोसाफ्ट ए.आई. इंजीनियर जैसे क्लाउड-बेस्ड एआई सर्टिफिकेशन्स की मार्केट में भारी डिमांड है।

ए.आई. से उत्पन्न होने वाले नए रोजगार

यह सच है कि एआई के आने से कुछ पारंपरिक नौकरियां कम हुई हैं, लेकिन इसने उससे कहीं ज्यादा नए और हाई-पेइंग (उच्च वेतन वाले) रोजगार पैदा किए हैं।

प्रॉम्प्ट इंजीनियर

ये ए.आई. मॉडल्स (जैसे-जैमिनी और चैट जी.पी. टी.) से सही और सटीक काम करवाने के लिए निर्देश (प्रॉम्प्ट) तैयार करते हैं। इसके लिए आवश्यक स्किल्स हैं - भाषा पर पकड़, लॉजिकल थिंकिंग और ए.आई. वर्क फ्लो।

ए.आई.और एम.एल.इंजीनियर

इनका काम ए.आई. एल्गोरिदम बनाना और मशीनों को डेटा के जरिए ट्रेंड करना होता है ताकि वे खुद फैसले ले सकें। इसके लिए आवश्यक स्किल्स हैं - पायथॉन, पायटॉर्च, टेंसरफलो और स्टेटिस्टिक्स।

जेनरेटिव ए.आई. डेव्हलपर

ये ए.आई. का उपयोग करके नए उत्पाद, चैटबॉट्स या ऑटोमेशन टूल्स का निर्माण करते हैं। इनके लिए जरूरी स्किल्स होती हैं - एल.एल.एम्स, लंगचैन और ए.पी.आई. इंटीग्रेशन।

डेटा इंजीनियर

इनका काम होता है ए.आई. मॉडल्स को ट्रेंड करने के लिए भारी मात्रा में मौजूद कच्चे डेटा को साफ और व्यवस्थित करना। इसके लिए इनके पास एस.क्यू.एल., बिग क्वेरी, स्नोफ्लेक और डाटा पाइप लाइन जैसी स्किल्स होनी जरूरी हैं।

ए.आई.एथिक्स स्पेशलिस्ट

ये ऐसी तकनीक विकसित करते हैं जिससे ए.आई. सिस्टम बिना किसी भेदभाव के सुरक्षित और नैतिक कार्य कर सके। इसके लिए पॉलिसी एनालिसिस, ए.आई. गवर्नेंस कानून की स्किल्स होनी जरूरी हैं।

कम्प्यूटर विजन इंजीनियर

ऐसी तकनीक विकसित करना जिससे मशीनें तस्वीरों और वीडियो (जैसे सेल्फ ड्राइविंग कार, फेशियल रिकॉग्निशन) को समझ सकें। इसके लिए ओपन सी.वी.इमेज प्रोसेसिंग और न्यूरल नेटवर्क की स्किल्स जरूरी हैं।

इनकी विशेषज्ञता प्राप्त करने के बाद आप लाखों रुपये सैलेरी का पैकेज पा सकते हैं।

हमारे तीर्थ

पवित्र गिरनार पर्वत

(गुजरात)

गुजरात के जूनागढ़ में स्थित गिरनार पर्वत और वहाँ बने मंदिर भारत के सबसे प्राचीन, पवित्र और ऐतिहासिक स्थलों में से एक हैं। यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता, ऊँचे पर्वतों और गहरी धार्मिक आस्था का एक अनोखा संगम है। गिरनार पहाड़ी श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी 'गोरखनाथ' समुद्र तल से लगभग 3,666 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस पर्वत की उत्पत्ति हिमालय से प्राचीन मानी जाती है। इसकी तलहटी में आज भी सम्राट अशोक कालखण्ड के शिलालेख देखे जा सकते हैं। गिरनार एक ऐसा पवित्र स्थान है जहाँ हिन्दू और जैन दोनों धर्मों के श्रद्धालुओं के समान आस्था है। इस पर्वत पर चढ़ते समय सर्वप्रथम जैन मंदिरों का एक भव्य समूह आता है। इनमें सबसे प्रमुख भगवान नेमीनाथ का मंदिर है। मान्यतानुसार उन्होंने इसी पर्वत पर मोक्ष प्राप्त किया था। इसके बाद की चढ़ाई में कुछ दूरी पर अंबा माता का मंदिर आता है। नवविवाहित जोड़े यहाँ सुखी जीवन का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आते हैं। दत्तात्रेय भगवान का मंदिर इस पर्वत की सबसे कठिन और अन्तिम चोटी पर स्थित है। हिंदू मान्यता के अनुसार, भगवान दत्तात्रेय ने यहाँ घोर तपस्या की थी। गिरनार के इस अंतिम शिखर तक पहुँचने के लिए लगभग 9,999 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। इस सम्पूर्ण चढ़ाई और उतराई में भक्तों को शारीरिक और मानसिक दृढ़ता की आवश्यकता होती है। वैसे जो लोग सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते, उनके लिए अब यहाँ

मदद के तरीके

लघुकथा

– रमेश रंजन त्रिपाठी

पंडित जी के माथे पर चिंता की लकीरें अस्वस्थ पंडिताइन से छिप नहीं सकीं। जोर देकर पूछने पर पंडित जी बोले –'सेठ गंगाधर बहुत बीमार हैं। अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी पत्नी ने सेठजी के स्वास्थ्य लाभ के लिए मुझसे अनुष्ठान करने का अनुरोध किया है। मैंने तुम्हारे अस्वस्थ होने की जानकारी देकर अभी उनके लिए अनुष्ठान करने में असमर्थता व्यक्त कर दी है। परंतु वे बार-बार आग्रह कर रही हैं।'

निष्ठापूर्वक कर्मकांड करानेवाले पंडितजी विद्वान, सात्विक, संतोषी और परोपकारी प्रवृत्ति के थे। पूजा-पाठ और उपुरोहित कर्म उनकी आजीविका थी। सेठ गंगाधर के यहाँ दो-चार बार पूजा कराने जा चुके थे। पंडितजी के उत्तम आचरण और ज्ञान से वे बहुत प्रभावित हुए थे। सेठजी के गंभीर रूप से बीमार होने पर सेठानी को ईश्वर की कृपा पाने के लिए पंडितजी की याद आई। यद्यपि सेजी को पैसे की कोई कमी नहीं थी। वे अनेक पंडितों को जानते थे, उनसे पूजा पाठ करा चुके थे, किसी भी पंडित को बुलाकर अनुष्ठान करा सकते थे। परंतु सभी का आचार-व्यवहार देखने के बाद सेठानी इस निर्णय पर पहुँची थी कि जितनी श्रद्धा और मनोयोग से पंडितजी अनुष्ठान करेंगे, कोई और नहीं करेगा। चूँकि सेठजी के जीवन-मरण का प्रश्न था इसलिए सेठानी इलाज के साथ भगवत्कृपा पाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती थीं। जैसे उन्होंने चिकित्सा के लिए सबसे अच्छे डॉक्टर और अस्पताल को चुना था, उसी तरह वे अनुष्ठान भी श्रेष्ठ पंडित से कराना चाहती थीं। यह विश्वास की बात थी।

अपने निस्पृह स्वभाव के कारण पंडितजी ने बहुत पैसा नहीं कमाया था। पंडिताइन के बीमार होने पर वे स्वयं उनकी सेवा, हैसियत के अनुरूप इलाज और आरोग्यता के लिए धार्मिक अनुष्ठान कर रहे थे। ऐसे कठिन समय में पैसे की कमी अखरना स्वाभाविक था। कुल मिलाकर पंडितजी के पास चिंतित होने की बहुत सी वजहें थीं। तभी दरवाजे पर महंगी गाड़ी आकर रुकी। सेठानी अंदर आईं और पंडिताइन की तबीयत पूछी। पंडितजी ने उन्हें बिठाया और औपचारिक उत्तर दे दिया। सेठानी सीधे मुद्दे पर आ गईं –'सेठजी के लिए आपको ही अनुष्ठान करना है। पंडिताइन को मैं उसी अस्पताल में भर्ती करा रही हूँ जिसमें सेठजी का इलाज चल रहा है। आप ईश्वर से प्रार्थना करें। बाकी चिंता मुझ पर छोड़ दें।' पंडितजी कुछ बोलते इससे पहले वे उठीं और यह कहते हुए चली गईं कि अस्पताल का स्टाफ पंडिताइन को लेने आ जाएगा।

सेठानी के जाने के बाद पंडितजी ने पंडिताइन से पूरी बात बताई। कुछ देर सोचने के बाद वे बोलीं –'सेठानी के आग्रह को मत ठुकराइए। आपको सेठजी के लिए अनुष्ठान करना चाहिए। शायद ईश्वर इसी तरीके से हमारी सहायता करते हुए मेरे इलाज की व्यवस्था कर रहे हैं।'

पंडितजी को बात उचित लगी। थोड़ी देर बाद पंडिताइन उसी अस्पताल में भर्ती हो गईं, जहाँ सेठजी का इलाज चल रहा था। पंडितजी ने सेठजी के लिए पूरी निष्ठा से अनुष्ठान प्रारंभ कर दिया। सात दिनों के बाद सेठजी और पंडिताइन को अस्पताल से छुट्टी मिल गई। जाते-जाते सेठानी और पंडितजी एक-दूसरे के प्रति कृतज्ञता से झुके जा रहे थे।

सभी जानते थे कि असली कृपा तो उस परमसत्ता की है, जिसके तरीकों को समझना सबके वश की बात नहीं होती।

हेमा संग उज्जवल

हेमा संग उज्जवल

सौभाग्यकांक्षिणी हेमा परमानन्द (सुपुत्री-सुश्री साथी परमानन्द) का शुभ विवाह फरीदाबाद निवासी चिरंजीव उज्जवल (सुपुत्र-श्रीमती रजनी एवं श्री संदीप गर्ग) के साथ विगत 27 जून को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में सम्पन्न हुआ। वात्सल्यमूर्ति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में वैवाहिक कार्यक्रमों का शुभारंभ 25 जून की संध्या सुन्दरकाण्ड के साथ हुआ। 26 जून को मेंहदी, तिलक और महिला संगीत तथा 27 जून को हल्दी, सगाई और शुभ विवाह के मंगल आयोजन सम्पन्न हुए।

पूज्या दीदी माँ जी ने बरसों-बरस तक वात्सल्य की बेटियों को अपने वात्सल्य और स्नेह से पोषित-पल्लवित करने के बाद अब उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को सुनिश्चित करने का बीड़ा उठाया है। इसके अन्तर्गत अब वे प्रतिष्ठित और संस्कारी परिवारों में ब्याही जा रही हैं।

हेमा ने अपनी शिक्षा बी.एड. तक पूरी की और उज्जवल कम्प्यूटर साइंस में बी.टेक. करने के बाद स्वयं का बिजनेस करते हुए एक आई.टी.सर्विस इन्टरप्रेन्योर हैं। विवाह समारोह के आशीर्वाद समारोह में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी और वात्सल्य परिवार के सभी वरिष्ठजनों ने नवयुगल को अपने आशीर्वाद और

विवाह की मंगल क्षणिकाएँ...

मेंहदी

हल्दी

पूज्या दीदी माँ जी के पावन सानिध्य में तिलक समारोह सम्पन्न कराते हुए ब्रज के विद्वान आचार्य श्री विष्णुकांत जी शास्त्री

चिरंजीव उज्जवल जी की माता श्रीमती रजनी जी एवं श्री संदीप जी को भेंट अर्पित करते हुए सुश्री साथी जी एवं श्री संजय भैयाजी

सौभाग्यकांक्षिणी हेमा एवं चिरंजीव उज्ज्वल के विवाह की शुभ क्षणिकाएँ

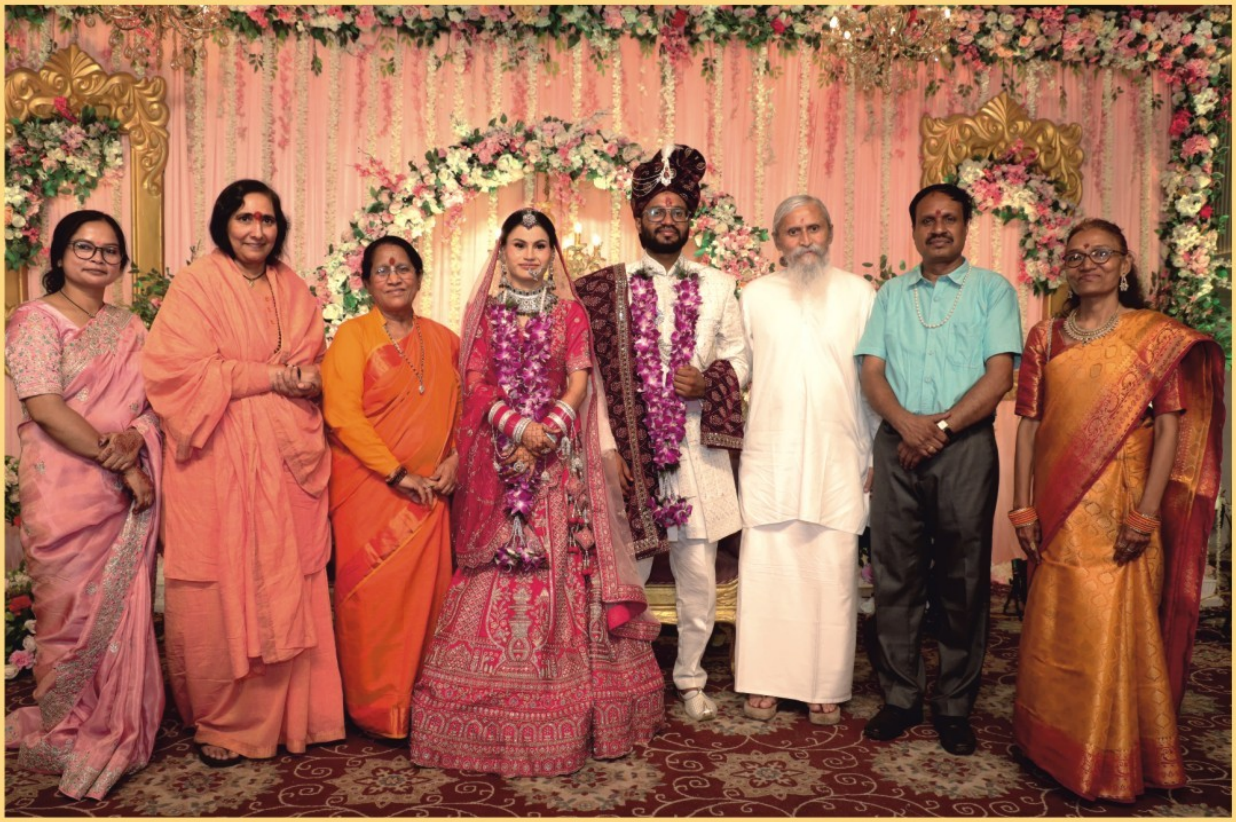

ऋषिका संग दमनदीप

ऋषिका संग दमनदीप

सौभाग्यकांक्षिणी ऋषिका परमानन्द (सुपुत्री-सुश्री सुमन परमानन्द) का शुभ विवाह दिल्ली निवासी चिरंजीव दमनदीप (सुपुत्र-श्रीमती रमेश एवं स्व.श्री द्वारकादास वालिया) के साथ विगत 29 जून को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में सम्पन्न हुआ। वात्सल्यमूर्ति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में वैवाहिक कार्यक्रमों का शुभारंभ 28 जून की प्रातः सुन्दरकाण्ड के साथ हुआ। 28 जून को मेंहदी, तिलक और महिला संगीत तथा 29 जून को हल्दी, सगाई और शुभ विवाह के मंगल आयोजन सम्पन्न हुए।

सौभाग्यकांक्षिणी ऋषिका ग्रेज्युएशन तक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के बाद 'क्रिस्टल कॉर्प्स प्रोटेक्शन' कंपनी में साउथ रीजन की सेल्स ऑफिसर हैं। चिरंजीव दमनदीप एक फिजिकल फिटनेस ट्रेनर हैं। विवाह आशीर्वाद समारोह में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी और वात्सल्य परिवार के सभी वरिष्ठजनों ने नवयुगल को अपने आशीर्वाद और शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

मंगल क्षणिकाएँ

सौभाग्यकांक्षिणी ऋषिका एवं चिरंजीव दमनदीप के विवाहोत्सव की शुभ क्षणिकाएँ

रजिस्ट्रेशन शुल्क - प्रति व्यक्ति 41000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में एक अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 35000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में दो अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 30000.00 रुपये
कुल सदस्य संख्या - 400

*.PARAM SHAKTI PEETH
Scan and Pay
UPI ID : PARAMSHAKTIPEETH.eazypay@icici

ACCOUNT DETAILS
Account Name : Param Shakti Peeth
Account No. : 033001001453
IFSC Code : ICIC0000330
Branch : Anand Vihar, Delhi

रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा करने के पश्चात पुष्टि हेतु 99585 80130, 8826888003 पर फोन कॉल अथवा व्हाट्स एप से सम्पर्क करें। आप ईमेल info@vatsalyagram.org द्वारा सूचना दे सकते हैं

सम्पर्क–82620 84090, 99585 80130
011 22238751, 99999 71714, 94122 77289

उपलब्ध सुविधाएँ :

- इस शुल्क में सात दिनों तक होटल सेवन हिल्स में आपका निवास और भोजन व्यवस्था सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त इसी शुल्क में प्रतिदिन श्रद्धालुगणों को स्थानीय मंदिरों एवं दर्शनीय स्थलों के भ्रमण की व्यवस्था भी रहेगी।
- होटल के एक कक्ष में दो श्रद्धालु रहेंगे।
- अपने गृह नगर से जगन्नाथ पुरी तक पहुँचने का यात्रा व्यय श्रद्धालुगण स्वयं वहन करेंगे।
- 31 अगस्त 2026 को जगन्नाथ पुरी के निकटतम भुवनेश्वर एयरपोर्ट से कथा स्थल तक पहुँचने और कथा समापन के पश्चात् 8 सितम्बर 2026 को पुनः एयरपोर्ट तक पहुँचने हेतु वाहनों की व्यवस्था श्रद्धालुगणों की पूर्व सूचना पर परमशक्ति पीठ की ओर से उपलब्ध रहेगी।
- यदि आपको विमान यात्रा टिकिट बुकिंग करने में कोई कठिनाई हो तो इसके लिए आप श्री अजय अग्रवाल से मोबाइल नंबर 95553 50061 पर संपर्क कर सकते हैं।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव

28 जुलाई 2026
पूज्या दीदी माँ जी की अमृतमयी वात्सल्य वाणी
समय : सायं 4 बजे से

29 जुलाई 2026
पूज्या दीदी माँ के पावन सानिध्य में गुरु दीक्षा एवं पादपूजन महोत्सव
समय : प्रात: 7 बजे से

स्थान : वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन, उ.प्र.

सम्पर्क नंबर : 9412277289, 9927572341, 8279773878, 8279793392

(व्यवस्थाओं की दृष्टि से कृपया अपने वात्सल्य ग्राम आगमन की पूर्व सूचना अवश्य दें)

विगत 22 जून को सदाशिव मन्दिर संन्यास मठ ट्रस्ट, वजीराबाद, दिल्ली के नवनिर्मित श्री हनुमंत भवन का लोकार्पण करते हुए रक्षामंत्री श्री राजनाथसिंह जी। साथ हैं-मठ के पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी श्री अभयानन्द जी सरस्वती महाराज, पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, पूज्य शंकराचार्य अनन्तश्री विभूषित राजराजेश्वराश्रम जी महाराज, श्री भैयाजी जोशी एवं दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता।

टेलीविज़न पर

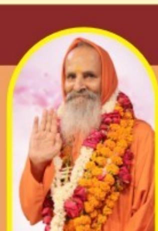

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष **स्वामी परमानन्द जी महाराज** की **परम वाणी**

दिशा TV — प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे

Vedic — सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति **दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी** की **वात्सल्य वाणी**

संस्कार (THE CHANNEL OF INDIA, हमारी संस्कृति हमारी विरासत) — प्रतिदिन सायं 7:20 बजे

आस्था — प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे

सत्संग — प्रतिदिन रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as *Girls Sainik School* by 'Sainik School Society' Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis,Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org